चकमक

जुलाई, 1994

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 5.00

पारुल, टीकमगढ़, म.प्र.

प्रदीप पंकज, तीसरी, लखनऊ, उ.प्र.

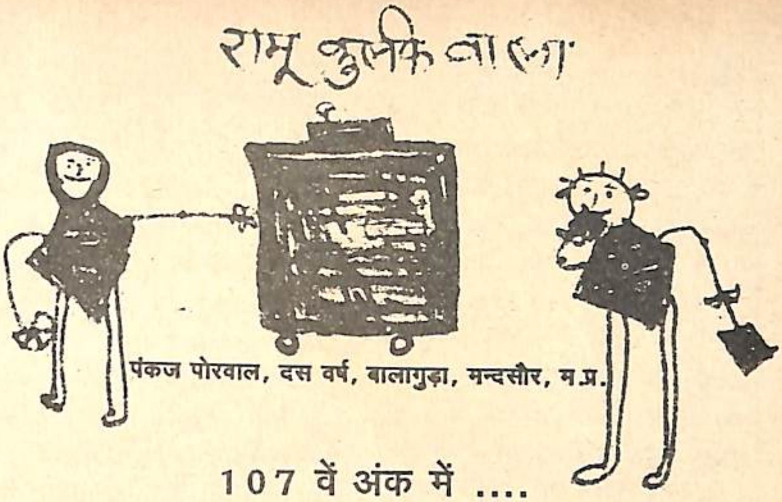

पंकज पोरवाल, दस वर्ष, बालागुड़ा, मन्दसौर, म.प्र.

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष:10 अंक:1 जुलाई, 1994

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल विश्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मनोज निगम

चकमक का चंदा
एक प्रति : पांच रुपए
छमाही : पच्चीस रुपए
वार्षिक : पचास रुपए
डाक खर्च मुफ्त
चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।
कृपया चेक न भेजें।

कागज : यूनिसेफ के सौजन्य से।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य,
ई-1/208,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016
(म. प्र.)
फ़ोन : 563380

107 वें अंक में ....

विशेष

3-20 ❑ शरद गुप्ता, राहुल अग्रवाल, गुरमीत सिंह सन्धू, राज अभिषेक, नितिन भण्डारी, गौरव शर्मा और सोनिया की कविताएँ।

❑ सना क़ैयूम, वैभव जोशी, मुकेश गौर, सौम्या सुरेश, वर्षा श्रीवास्तव, हितेश चौहान, ध्रुव गुप्ता, राकेश चन्द्र पन्त और धीरेन्द्र श्रीवास्तव की कहानियाँ।

❑ पंकज पोरवाल, सना क़ैयूम, आशा रणछोड़, नीता अग्रवाल, मुकेश कुशवाहा, ऋचा, संजय कुमार, नेहा खिड़वड़कर, राजेश कुमार, मोनालिसा नाकराली, अभिषेक बिल्लौरे, टिकेश राजे, कैलाश, यशोधन गंदगे, सिद्धार्थ जोशी, विनीता जोशी, वरीय केतन, शोभा सरोदे, श्वेता पोद्दार, करुणा, ज्योति कुमार, नमो कुमारी, पारुल, प्रदीप पंकज, बनश्री साहा, स्मिता गर्ग, शीबा, वैभव जेम्स, आवेग उपाध्याय, मनीष और पलाश गांगुली के चित्र।

धारावाहिक

21 ❑ गणित के खेल

28 ❑ मनुष्य महाबली कैसे बना?-11

36 ❑ विज्ञान कथा-अनोखा जीव : समापन किस्त

हर बार की तरह

23 ❑ हमारे वृक्ष- 27 : सहजन

24 ❑ चित्रकथा : क़िस्सा आफ़न्ती का

26 ❑ खेल काग़ज़ का

32 ❑ माथापच्ची

और यह भी

2 ❑ पाठक लिखते हैं

34 ❑ मकड़ी बन्दर : कविताएँ

आवरण : प्रियंका भागवत, सातवीं, भोपाल, म.प्र.

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

चकमक के मई '94 अंक में 'पाठक लिखते हैं' के तहत भोपाल के श्री ज़ुबेर अहमद और लखनऊ के श्री ज़ाकिर अली 'रजनीश' के पत्र पढ़कर दुखद आश्चर्य हुआ। चूँकि सम्पादक ने अपना स्पष्टीकरण न देकर पाठकों के 'नीर-क्षीर विवेक' पर छोड़ दिया है, अतः लम्बे अरसे से 'चकमक' का एक पाठक और बाल-साहित्य का विद्यार्थी होने के नाते इस सन्दर्भ में अपनी बात रखना आवश्यक समझता हूँ।

भाई ज़ुबेर को जहाँ एक पूरे पृष्ठ पर 'बेकार-सी बिना तुक की' कविता तथा पाँच पृष्ठ की सामग्री को तेरह पृष्ठों में छापने पर आपत्ति है, वहीं फालतू बातों से पत्रिका भर देने और मूल्य पाँच रुपये रखने पर रोष भी है। दूसरे भाई ज़ाकिर अली को पत्रिका में प्रदेशवाद की बू आती है और 'बेसिर-पैर' की रचनाएँ छपने तथा 'यूनिसेफ़ के कागज को लीप-पोतकर बर्बाद' करने पर वे बेहद चिन्तित हैं। उन्होंने पत्रिका को बन्द करने का भी सुझाव दिया है।

मेरे प्यारे भाईयो! क्या आपने अपनी राय जाहिर करने के पूर्व अपने परिवार के बच्चों को यह पत्रिका देकर उनकी राय भी ली है? क्या हिन्दी में कोई और भी बाल-पत्रिका ऐसी है जिसमें बच्चों की इतनी अधिक भागीदारी होती हो? मैं ऐसे कई बच्चों को जानता हूँ जिनके उल्टे-सीधे-टेढ़े-मेढ़े रेखांकन सर्वप्रथम इसी पत्रिका में छपे थे और यथोचित प्रोत्साहन पाकर वे अब देश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित-प्रशंसित होते हैं। चकमक बाल विज्ञान की पत्रिका है जरूर पर यह विज्ञान की पाठ्य-पुस्तक कतई नहीं है। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखकर बाल-साहित्य व विज्ञान विषयक सामग्रियाँ जितने सरस तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से 'चकमक' में परोसी जाती हैं, वैसे अन्यत्र नहीं। इस अव्यावसायिक पत्रिका का सोद्देश्य प्रकाशन उन व्यावसायिक बाल- पत्रिकाओं से कहीं बेहतर है जिनकी कोई सम्पादन-दृष्टि ही नहीं है। एक पृष्ठ पर एक की बजाय दस कविताएँ भी छापी जा सकती हैं पर आपको शायद यह पता नहीं है कि बच्चे चित्रों के माध्यम से ही रचना की मूल आत्मा तक पहुँच पाते हैं। यही वजह है कि बगैर उचित रेखांकन के बाल-रचना की पूर्णता व सम्प्रेषणीयता संदिग्ध है।

सच्चा बाल रचनाकार वही है जिसके पास आँखें बच्चों की हों। और विषयवस्तु का अत्याधुनिक व वैज्ञानिक ज्ञान भी हो। बच्चा बने बिना न तो बच्चे की मानसिकता को समझा जा सकता है, न बाल-साहित्य को ही। काश! रचनाएँ अस्वीकृत हो जाने पर खिसियानी बिल्ली-सा खम्भा नोचने की बजाय हम आत्मनिरीक्षण व आत्मालोचन करना सीखते। अपनी रचनाओं को परिष्कृत-परिमार्जित करने की बजाय पत्रिका को ही दो कौड़ी की साबित करना हमारी दो कौड़ी की मानसिक सोच का ही परिचायक है।

जिस विशेषांक की चर्चा इन भाई ने की है उसमें छपे अनेक रचनाधर्मी मध्यप्रदेश के बाहर के हैं। गुलज़ार (बम्बई), अमृतराय (इलाहाबाद), राष्ट्रबन्धु (कानपुर), श्रीप्रसाद (वाराणसी), हरिकृष्ण देवसरे (दिल्ली) आदि रचनाकार क्या मध्यप्रदेश की प्रादेशिक परिधि में आते हैं? यदि तारीफ़ करना चापलूसी है तो बेसिर-पैर की आलोचना भी किसी मूर्खता से कम नहीं। सम्पादक जी, आशा है, आप पूर्वाग्रहियों की परवाह किए बग़ैर बच्चों की कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को पूर्ववत विकसित-परिष्कृत करते रहेंगे।

❑ **भगवती प्रसाद द्विवेदी**
पटना, बिहार

चकमक का मई अंक मिला। 'आफ़न्ती का क़िस्सा' और धारावाहिक 'अनोखा जीव' अच्छे लगे। हमारे वृक्ष में आपने 'बील' के बारे में बताया। जयपुर में गर्मियों में लोग बील के रस को, रस की दुकानों पर बहुत शौक से पीते हैं। चकमक में पेड़ का नाम 'बेल' छपा था-यह 'बील' होना चाहिए था। बील के वृक्ष के पत्ते 'बील पत्र' शिवमन्दिर में भी चढ़ाए जाते हैं।

चित्रों से कैक्टस के बारे में अच्छी जानकारी मिली।

'पाठक लिखते हैं' में श्री ज़ुबेर अहमद की आलोचना अच्छी नहीं लगी-ख़ासकर 'मोजों से दावत' कहानी के बारे में।

❑ **प्रवीण नाग, जयपुर, राजस्थान**

मैंने 'चकमक' बाल विज्ञान पत्रिका का अप्रैल 1994 का 104 वाँ अंक पढ़ा। पढ़कर प्रसन्नता हुई। लेकिन एक कविता 'सुबह सुबह', श्री भूपेश होल्कर, इन्दौर द्वारा रचित पढ़ी जिसकी यह पंक्तियाँ उद्धृत हैः-

"मुझको डर था भूत आएगा,
मुझको सूत-सूतकर खाएगा।"

उक्त पंक्तियाँ बालकों के सर्वांगीण विकास में बाधक हैं। यह पंक्ति बालकों को निर्भीक बनाने की अपेक्षा भयभीत करने वाली है।

आज का युग वैज्ञानिक, प्रतियोगी, कम्प्यूटर का है। इस युग की अनेक विशेषताएँ हैं। इस प्रगतिशील युग में अंधविश्वास, रूढ़िवाद को सलामत रखने वाली अनावश्यक, निरर्थक बातों का प्रकाशन पूर्व-व्याप्त बुराइयों की पुनरावृत्ति करता है। जैसा बोओगे वैसा काटोगे। याने बालक को जैसी शिक्षा देंगे बालक ऐसा ही ढल जाएगा।

जब तक अज्ञानता, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, वर्ग भेद समाप्त न होंगे, तब तक सभी पहलू अविकसित रहेंगे।

इसलिए महोदय, बालकों को वही शिक्षा दी जाए जिससे उसका सर्वांगीण विकास हो, रोज़गारोन्मुख हो व उसकी प्रगति हो।

❑ **हीरालाल एरवाल, सहायक अध्यापक**
दुकराल, उज्जैन, म.प्र.

मेरा पन्ना

पिकनिक

एक दिन मैं अपने दोस्तो के साथ बस मे बैठ कर पिकनिक बनाने पार्क गई। वहाँ पर अपने दोस्तो के साथ खूब खेली। फिर हम सब ने मिलकर खाना खाया, खाना खाकर गाना गाया। पार्क मे कई तरह के पेड़-पौधे और फूल थे। हमने कई फूल तोड़े। उसके बाद हमलोग फिर बस मे बैठ कर वापस आ गए।

कहानी और चित्र: सना क़ैयूम, छह वर्ष, अलीगढ़, उ.प्र.

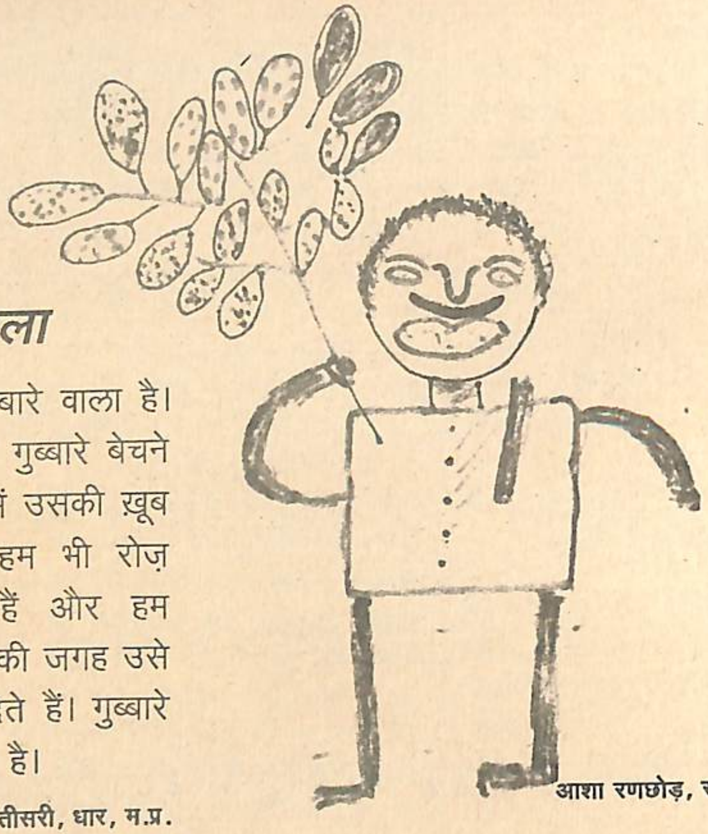

गुब्बारे वाला

हमारे गाँव में एक गुब्बारे वाला है। वह हर रोज़ शाम को गुब्बारे बेचने आता है। हमारे गाँव में उसकी ख़ूब बिक्री हो जाती है। हम भी रोज़ उससे गुब्बारे लेते हैं और हम उसके गुब्बारे के पैसे की जगह उसे मुट्ठी भर अनाज दे देते हैं। गुब्बारे वाला हमसे बहुत खुश है।

❑ वैभव जोशी, तीसरी, धार, म.प्र.

आशा रणछोड़, सातवीं, धार, म.प्र.

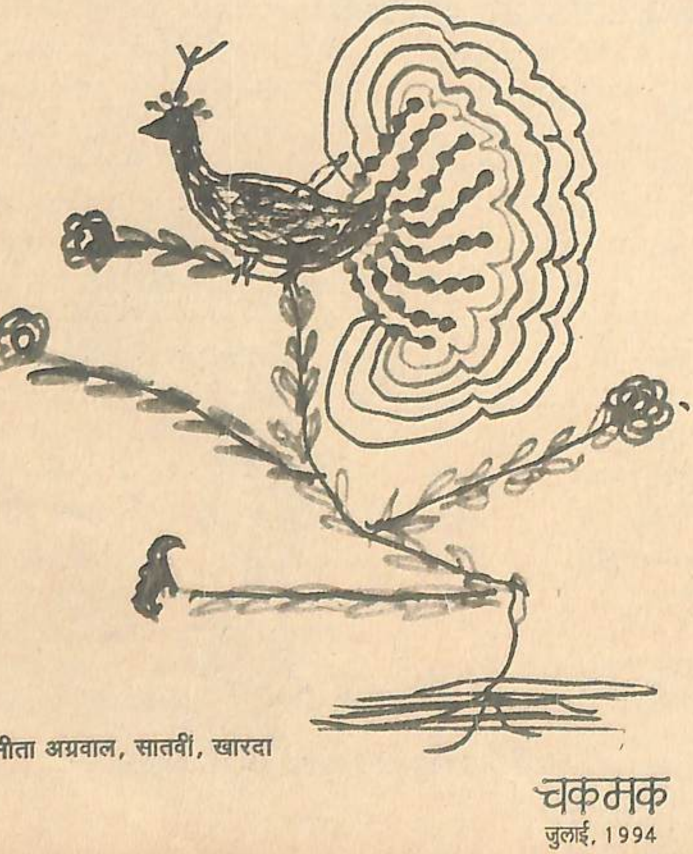

नीता अग्रवाल, सातवीं, खारदा

मोर

आसमान हुआ कुछ गहरा
बादल का है रंग सुनहरा
तेज हो रहा बूँदों का शोर
नाच रहा अलबेला मोर

रंगीन बदन है कण्ठ है नीला
पंखों का है रंग चमकीला
लम्बे पर हैं सिर पर सेहरा
है मयूर का रूप सजीला

कीट सर्प चूहों को खाता
बारिश का मौसम इसको भाता
काली घटा जब छा जाती
पंख फैलाता, खुशी जताता।

❑ शरद गुप्ता, ग्यारहवीं, निवाड़ी, टीकमगढ़, म. प्र.

बरसात

बादलों से जब आता सूरज
तब हो जाती गर्मी
फिर जब सूरज ढलता
हो जाती सर्दी

ठंडक में बच्चे खेलें कूदें
और मनाएँ मस्ती
अगर कभी बारिश हो जाए
तो बच्चे तैराएँ कश्ती।

❑ राहुल अग्रवाल, दूसरी, दिल्ली

मुकेश कुशवाहा, करकटी, शहडोल,म.प्र.

बरसात में एक दिन

यह उन दिनों की बात है जब मैं कक्षा छठवीं में और मेरा बड़ा भाई पंकज कक्षा सातवीं में पढ़ते थे। एक दिन बरसात हो रही थी। हम दोनों भाई छतरी में स्कूल जा रहे थे। उसी दिन हमारी परीक्षा थी। बीच में एक नाला पड़ता था। बरसात के कारण पुल के ऊपर से पानी जा रहा था। हम क्या करते हमें तो तैरना आता ही नहीं था। हम भगवान से प्रार्थना करने लगे कि पानी गिरना बन्द हो जाए और पुल पर जो पानी बढ़ रहा था वो उतर जाए। ठीक वैसा ही हुआ और हम पुल पर से स्कूल पहुँच गए।

वहाँ जाकर देखा वहाँ कोई भी नहीं था। और स्कूल भी बन्द। फिर निराश होकर हम घर आ गए। हमने घर आकर परीक्षा का टाइम-टेबल देखा। देखने के बाद हमें पता चला कि परीक्षा कल है, आज तो रविवार है। फिर हम खूब हँसे।

❑ मुकेश कुमार गौर, सातवीं, चौकड़ी, होशंगाबाद,म.प्र.

दास्तान-ए-कमीज़

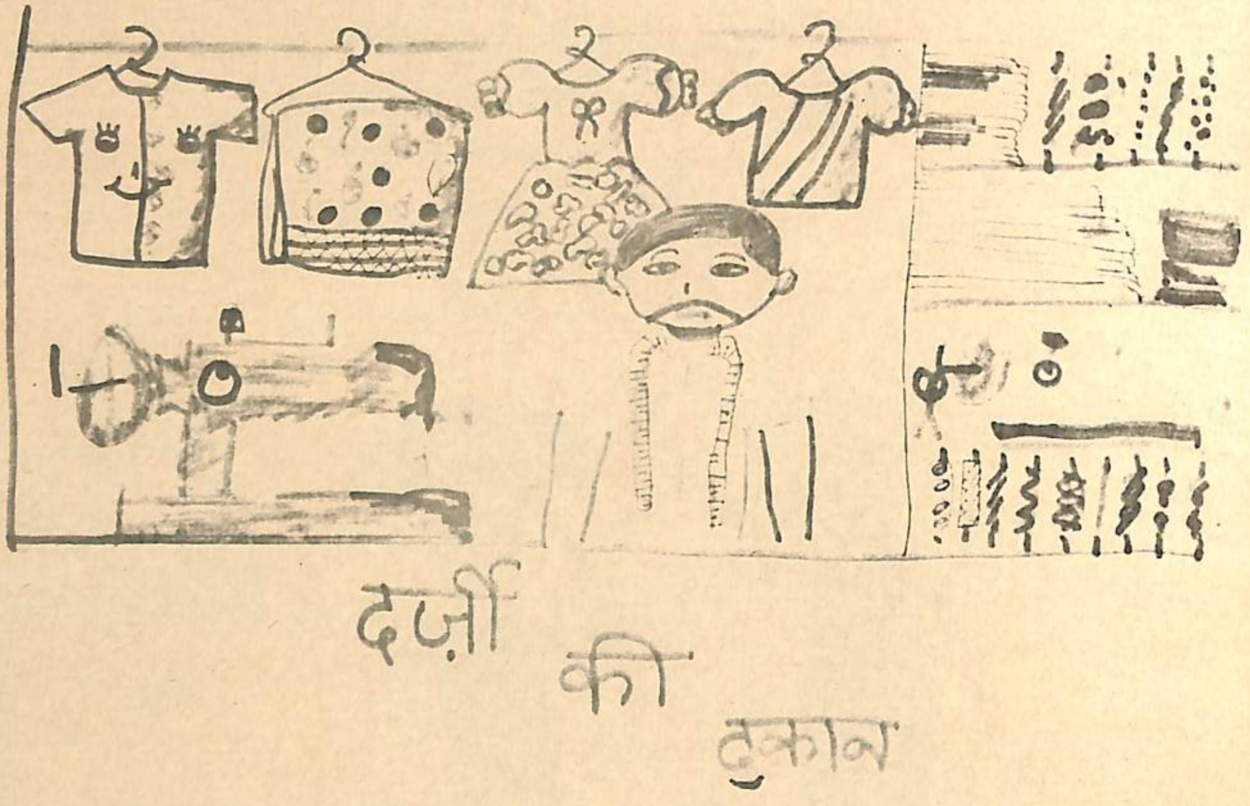

मेरा जन्म लगभग तेरह साल पहले हुआ था। एक दिन एक बड़ा अमीर सेठ बाज़ार गया और उसने एक सुन्दर-सा कपड़ा ख़रीदकर शहर के सबसे ज़्यादा महंगे दर्ज़ी को एक कमीज़ सिलने के लिए दे दिया। दर्ज़ी ने कमीज़ को बड़ी ख़ूबसूरती से बनाया और प्यारे-प्यारे बटन भी लगाए। और इस तरह वह कमीज़ बनकर तैयार हो गई। जी हाँ, मैं वही कमीज़ हूँ जिसके बारे में आप पढ़ रहे हैं। और अगर और पढ़ना चाहते हैं तो आगे पढ़िए।

जिस दिन मैं बनकर तैयार हुई उसके अगले ही दिन सेठ जी मुझे लेने आ पहुँचे। मुझे दर्ज़ी के पास रहकर उससे दोस्ती करने का मौका ही नहीं मिला। ख़ैर, मैंने दर्ज़ी की दुकान और उस दुकान के दूसरे कपड़ों से विदा ली और अपने नए घर को चल पड़ी। सेठ जी दुकान से निकलकर लाल रंग की चमचमाती हुई कार में बैठ गए। और मुझे बगल की सीट पर रख दिया। वाह क्या मज़ा आ रहा था।

मैं नए घर के सामने पहुँच गई। वहाँ पहुँचते ही मेरी आँखें खिड़की की तरह खुल गईं। बाप रे बाप, इतनी बड़ी हवेली! फिर सेठ जी ने मुझे अपने लड़के को तोहफे की तरह दे दिया। लड़का मुझे अपने कमरे में ले गया। उफ़! कमरा था कि काँच का डिब्बा। चारों तरफ काँच ही काँच। खिड़की काँच की, दरवाज़ा काँच का, पूरी दीवारों पे काँच के शीशे। सब-कुछ काँच ही काँच का। गनीमत है लड़का काँच का नहीं था।

ओह! एक ग़लती हो गई, मैं आपको अपने नए दोस्त यानी रोमी से मिलवाना तो भूल ही गई। नहीं समझे? अरे वही शैतान लड़का जिसके लिए मैं बनी। मुझे उसके साथ ख़ास अच्छा नहीं लगा। वो बहुत शैतान था और शैतान बच्चे मुझे पसन्द नहीं। वैसे मुझे दोस्ती करने का बड़ा शौक़ है। अगर मुझे

कार में ज़्यादा समय तक रहना पड़ता तो मैं कार की सीट से ही दोस्ती कर लेती। ख़ैर, आगे बढ़ें। रोमी ने मुझे पैकेट से निकाला। मैंने अपनी शक्ल पहली बार देखी। वाह! मैं अपनी ही सूरत देखकर खिल गई। लेकिन जिस तरह का मुँह बनाकर रोमी ने मुझे देखा तो मेरी सारी खिलखिलाहट दूर हो गई। ख़ैर, उसने मुझे पहना और खेलने निकल गया। न जाने कितने गंदे में खेलता रहा। उसके एक दोस्त ने तो मुझे इतनी ज़ोर से खींचा कि मुझ में एक छेद हो गया। एक पत्थर से तो ऐसा टकराया कि मैं बेहोश होते-होते बची। जब वह घर वापस आया तो शीशे में अपनी सूरत देखकर मुझे रोना आ गया। फिर रोमी ने कपड़े बदलकर मुझे एक अलमारी में बन्द कर दिया। ओफ़! क्या बदबू थी वहाँ पर। मेरा तो दम घुटा जा रहा था। कुछ दिनों तक मैं उस अलमारी में बन्द रही। फिर एक दिन रोमी ने मुझे निकाला और मेरी तरफ बुरा-सा मुँह बनाकर मुझे अपने नौकर को दे दिया। नौकर तो बहुत बूढ़ा था। और मैं तो किसी बच्चे के नाप की थी।

वो मुझे लेकर चल दिया। मैं रास्ते भर यही सोचती रही कि मुझे कौन पहनेगा। आख़िर वो लम्बा सफ़र ख़त्म हो ही गया। नौकर एक छोटी-सी झोपड़ी में दाखिल हुआ। उसने मुझे अपने पोते के हाथ में सौंप दिया। यह बच्चा था बढ़िया। मुझे वो अच्छा लगा। उसने मुझे प्यार से धोकर साफ़ किया, फिर सुखाया और बड़े प्यार से एक डिब्बे में रख दिया। मुझे वहाँ इतना अच्छा लग रहा था। उसका नाम मालूम है आपको? उसका नाम था मुन्ना। मुझे रखकर मुन्ना कहीं चला गया लेकिन जल्दी ही लौट आया। उसके हाथ में एक गुलाब का फूल था जिसे वो पड़ोस के बाग से तोड़कर लाया था। उसने वह फूल मेरे डिब्बे में रख दिया। वाह! पूरे टाइम खुशबू से मज़ा आ जाता था। मुन्ना मुझे कभी-कभी ही पहनता था। जब वो बड़ा हो गया तब तक मैं थोड़ी फट भी गई थी, कई दाग़ भी लग गए थे।

एक दिन मुन्ना की माँ ने मुझे फाड़कर चौके का कपड़ा बना लिया। कुछ दिनों तक तो मैंने खूब रोटियाँ सेंक-सेंककर मुन्ना के परिवार को खिलाईं। फिर आख़िरकार जब मैं बहुत ही गंदी हो गई तो फिर (मुझ पर हँसना मत) मुन्ना की माँ ने मेरा पोंछा बना लिया। अभी भी मैं मुन्ना के घर में पोंछा लगाती हूँ। लेकिन फिर भी मुझे यहाँ रहकर पोंछा लगाना रोमी के पास रहने से अच्छा लगता है।

❑ **सौम्या सुरेश, सातवीं, भोपाल, म.प्र.**
चित्रः ऋचा, ग्यारह वर्ष, भोपाल, म.प्र.

संजय कुमार, चौदह वर्ष

पतंग

पतंग हमने खूब उड़ाई
चंग हमने लूटे।
कितने बार हाथ टूटे।
और सिर फूटे।
फिर भी आदत नहीं कभी छूटी
एक दिन काटा मुझको चूँटा।
तभी लगी हाथ में मुझको
और धागा टूटा।
उड़ती-उड़ती पतंग जाकर
पेड़ पर अटकी।
हवा के तेज़ झौंके आए
फिर भी न छिटकी।

❑ राज अभिषेक, ग्यारह वर्ष, डुमराँव, बिहार

पेड़

मैं पेड़ हूँ हरा भरा।
रहता हूँ सदा यहीं खड़ा।
तुम मुझे हो क्यों काटते?
धूप में हो तुम मेरी छाया में बैठते।
मैं तुम्हें हूँ फल खिलाता
तुम्हें धूप से हूँ बचाता।
मुझे कभी मत काटना
काटने वालों को डाँटना।

❑ गुरमीत सिंह सन्धू, पाँचवीं, गढ़ी बारोद, शिवपुरी, म. प्र.

नेहा खिड़वड़कर, दस वर्ष, भोपाल, म.प्र.

जंगल में गृह युद्ध

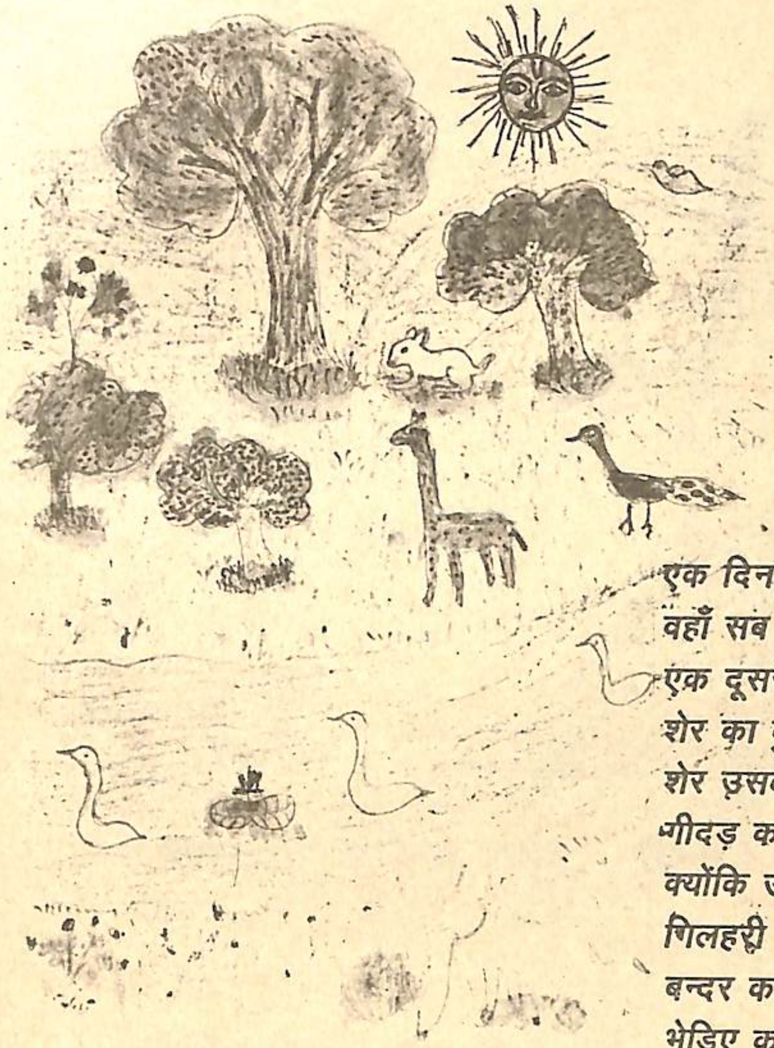

राजेश कुमार, आठवीं, अमलेटा, रतलाम, म.प्र.

एक दिन मैं जंगल की करने गया था सैर
वहाँ सब जानवर रखते थे
एक दूसरे से बैर
शेर का दुश्मन था खरगोश
शेर उसको कहता था अहसान फरामोश
गीदड़ का था दुश्मन सियार
क्योंकि उसने खाई थी सियार से मार
गिलहरी का दुश्मन था बन्दर
बन्दर कहता था उसको जोकर
भेड़िए का दुश्मन था भालू
भेड़िया कहता था उसको कालू
उसका था एक और दुश्मन - हाथी
हाथी था भालू का साथी
नीलगाय का दुश्मन था हिरन
क्योंकि उससे जलता था उसका मन
चूहे का दुश्मन चिंपाजी था क्योंकि
चूहा उसको समझता था घमण्डी
जिराफ का था दुश्मन साँप
लम्बा नहीं था उसका माप
इस तरह सब जानवर हो गए क्रुद्ध
और एक दिन हो गया एक गृहयुद्ध।

❑ नितिन भंडारी, छठवीं, बाली, पाली, राजस्थान

मेरा भाई

मोनालिसा नाकराली, सात वर्ष, जंगर उमरेली, गुजरात

मैं अपने तीन वर्ष के छोटे भाई प्रवीण के साथ रहती हूँ। वह मुझसे हर दम लड़ता है। मुझे मार भी देता है। जब मैं पापा जी से शिकायत करती हूँ तब वे कहते हैं, ''प्रवीण तुमसे बहुत प्यार करता है।'' और पापा जी हम दोनों को समझाकर लड़ाई शान्त कर देते हैं।

एक दिन मैं, मम्मी, पापा और प्रवीण कमरे में बैठे थे। तभी प्रवीण किसी बात पर झगड़ बैठा। हम दोनों में मारा-मारी शुरू हो गई। हमारे ऊधम को पापा जी शान्त बैठे देखते रहे। प्रवीण की आँख बचाकर मैं पलँग के नीचे छिप गई। प्रवीण ने मुझे चारों ओर देखा और जब उसने मुझे कहीं नहीं पाया तो मम्मी से पूछा ''दीदी कहाँ है?''

मम्मी ने कहा, "दीदी को बिल्ली खा गई।" इतना सुनते ही प्रवीण का चेहरा मुरझा गया। कुछ देर के बाद वह बेतहाशा रो पड़ा। वह रोते-रोते कह रहा था नहीं मैं दीदी के साथ खेलूँगा। तब मैं बाहर निकल आई । मैंने प्रवीण को चुप कराया। मुझे पापा जी की बात याद आई, मुझे भी लगा कि मेरा भाई प्रवीण मुझे कितना चाहता है।

❑ वर्षा कुमारी श्रीवास्तव, दूसरी, मुरैना, म.प्र.

पतंग

आजकल पतंगों का मौसम चल रहा है और मुझे भी पतंग उड़ाने का बहुत शौक है, जब भी मैं पतंग उड़ाता हूँ तो मुझे पिछले साल घटी एक भयानक वास्तविक घटना याद आ जाती है। मेरी एक छोटी बहन डिम्पी है। जब वह एक साल की थी' एक दिन वह मेरी मम्मी को बहुत परेशान कर रही थी। तो मैं उसे खिलाने के लिए छत पर लेकर गया। मेरी मम्मी ने मुझे कहा था कि छत पर उसका ध्यान रखना, नहीं तो पतंग देखने में लग जाए। पर हुआ वही जो होना था।

मेरा ध्यान पतंगों की दुनिया में मग्न हो गया। मैं सोचने लगा कि नीली या लाल रंग की पतंग में से जो भी कटे, मेरी छत पर आ जाए और मैं उचक कर पकड़ लूँ। इतने में मेरी छोटी बहन छत पर चारों ओर लगी छड़ पर चढ़कर पलटी खाकर बालकनी में गिर पड़ी। बहुत ज़ोरों की आवाज़ आई। मैं चिल्लाया, 'बचाओ बचाओ।' इतने में मेरी मम्मी घबराकर छत पर आईं। वो समझीं मुझे कुछ हो गया है।

मेरी बहन बालकनी पर से छत पर आने की कोशिश में खड़ी हुई तो पाँव सही न रख पाने के कारण पलटी खाकर आँगन में गिरी। मैं रोता हुआ बाहर भागा 'मेरी बहन को बचाओ वो छत पर से गिर गई है।' सारे मोहल्ले वाले इकट्ठे हो गए। उसके सिर पर दो बड़े टेमले उठ गए थे। मेरी मम्मी बहुत घबरा रही थीं और पापा भी ऑफ़िस गए हुए थे। मम्मी ने हल्दी व चूना लगाया, फिर मेरी बहन रोकर सो गई। जब वह सोकर उठी तो खेलने लगी। फिर भी मेरे मन में डर बैठा रहा कि शाम को पापा जी आकर मुझे डाँटेंगे, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। ऑफ़िस से आने पर पापा जी को जब पता चला कि डिम्पी मेरे कारण छत पर से गिर गई है तो उन्होंने मुझे डाँटा नहीं बल्कि समझाया। तब जाकर मेरा डर दूर भागा। अब जब भी मैं पतंग उड़ाता हूँ तो मुझे वही घटना याद आ जाती है।

❑ **हितेश चौहान, छठवीं, भोपाल, म.प्र.**

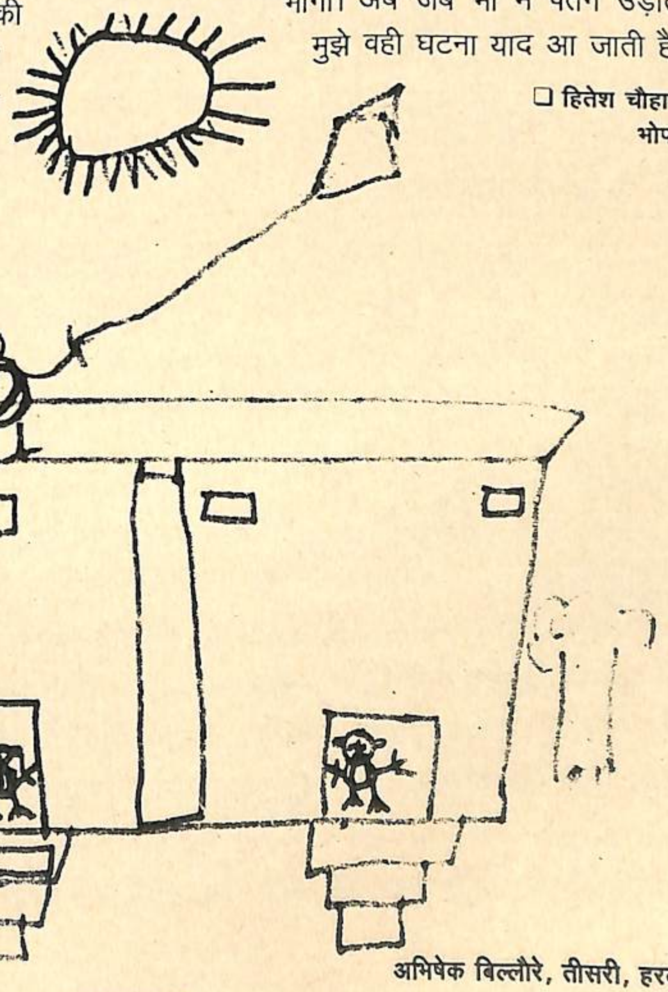

अभिषेक बिल्लौरे, तीसरी, हरदा, म.प्र.

टिकेश राजे, चौदह वर्ष, धार, म.प्र.

माउन्ट आबू की सैर

मेरी इच्छा परीक्षा समाप्ति के बाद कहीं घूमने की थी। इतने में पापा ने बताया कि वे कॉन्फ्रेंस में माउन्ट आबू जा रहे थे। मुझे बहुत खुशी हुई कि मैं भी उनके साथ जाऊँगा, लेकिन जैसे ही मुझे मालूम हुआ कि वो मेरी परीक्षा ख़त्म होने से पहले ही जा रहे हैं तो मेरी खुशी ख़त्म हो गई। तब मैं उदास हो गया। फिर मेरा उदास चेहरा देखकर मम्मी ने मुझसे कहा कि तुम उदास मत होओ। पापा को जाने दो, हम तुम्हारी परीक्षा ख़त्म होने के बाद आबू-पर्वत चलेंगे और पापा हमें वहीं मिल जाएँगे।

मेरी परीक्षा ख़त्म होते ही मैं और मम्मी माउन्ट-आबू के लिए रवाना हो गए। पापा ब्रह्मकुमारी आश्रम में ठहरे थे। वहाँ एक बहुत बड़ा हरी घास का मैदान था। उसमें बहुत-से स्त्री-पुरूष घूम रहे थे और बच्चे खेल रहे थे। मैं भी उन बच्चों के साथ खेलने लगा। थोड़ी देर बाद हम सब दोस्त बन गए। अगले दिन पापा की कॉन्फ्रेंस समाप्त होने के बाद हम नक्की झील घूमने गए। इतनी बड़ी झील देखकर मन प्रसन्न हो गया। हमने पैडल बोट में बोटिंग की।

नाव में दो सीटें थीं, हम तीन थे। इसलिए पहले मम्मी और मैं उसमें बैठे। थोड़ी देर बाद मम्मी उतर गईं और पापा मेरे साथ आ गए। बोटिंग में इतना मज़ा आया कि अभी भी बोटिंग करने की इच्छा हो रही है। पापा ने झील का फोटो भी लिया। उसके बाद देलवाड़ा के जैन मन्दिर में भी गए। मम्मी ने बताया कि मन्दिर आठ सौ साल पुराना है। इन मन्दिरों में कई तरह की सुन्दर मूर्तियाँ बनी हुई हैं। उन मूर्तियों को देखते ही बनता था। उसके बाद हम पहाड़ी पर शिव मन्दिर भी गए। पापा ने मन्दिर के कई फोटो भी लिए। फिर हम शान्ति पार्क गए, वहाँ तरह-तरह के पौधे लगे हैं। फिर आने की इच्छा न होने पर भी मम्मी-पापा के कहने पर मुझे लौटना पड़ा। एक बार फिर वहाँ जाने की इच्छा होती है।

❑ ध्रुव गुप्ता, चौथी, मनासा, मन्दसौर, म.प्र.

रेल

छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ से जाती रेल
गाँवों में जाती, शहरों में जाती
पहाड़ों पे जाती, पर्वतों पे जाती
रेल कराती सबका मेल
छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ जाती ये रेल।
डीजल से चलती बिजली से चलती
कोयले से भी भागी जाती रेल
बड़ा अनोखा इसका खेल
टिकिट नहीं लेता जो सफ़र फ्री में करता
उसको भिजवा देती है जेल
जो जन्म रेल में लेता उसको जीवन भर
बिन पैसे लाती ले जाती है रेल
छुक छुक छुक छुक करती रेल
रेल कहाँ जाती ये रेल।

❑ गौरव शर्मा, टिमरनी, होशंगाबाद, म.प्र.

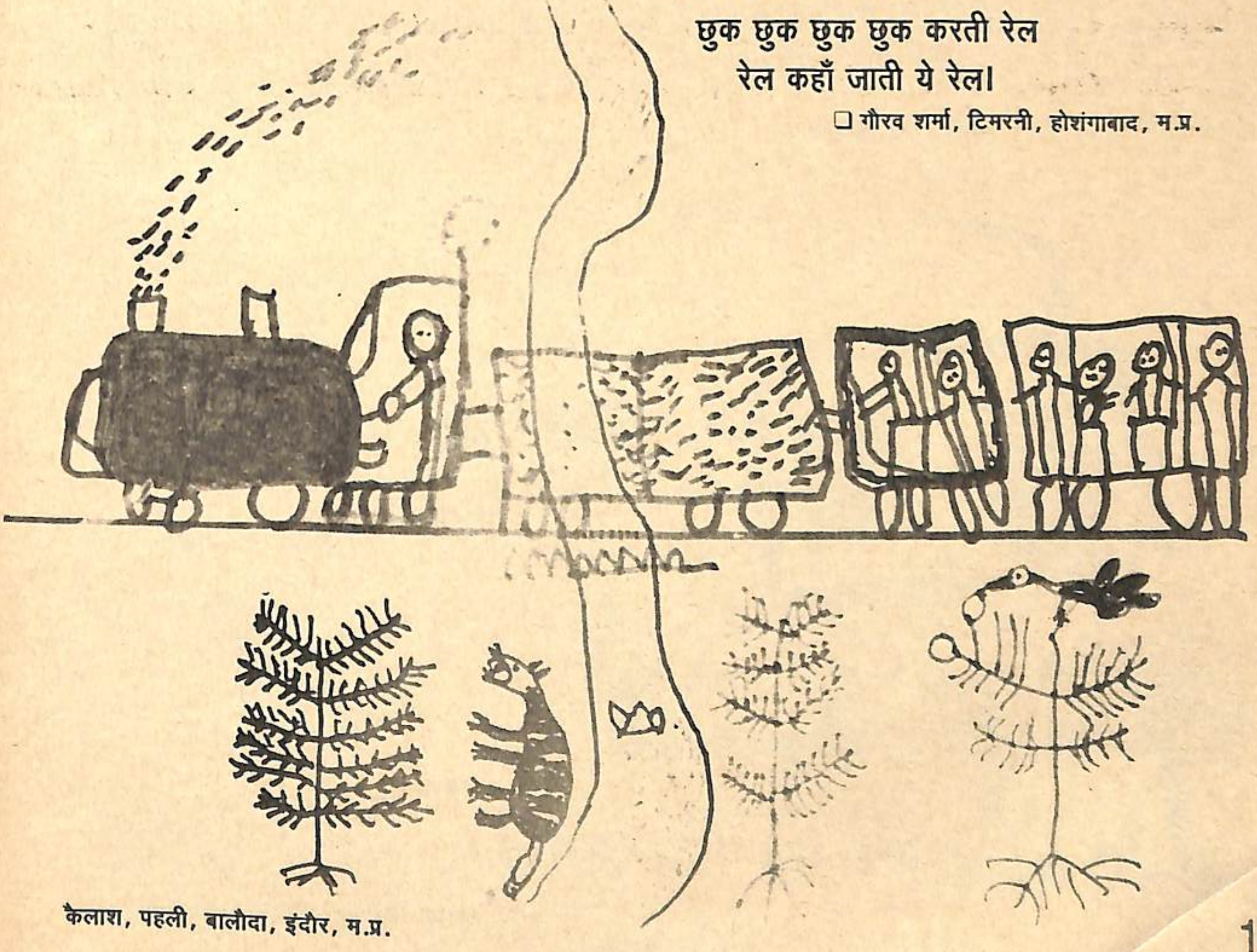

कैलाश, पहली, बालौदा, इंदौर, म.प्र.

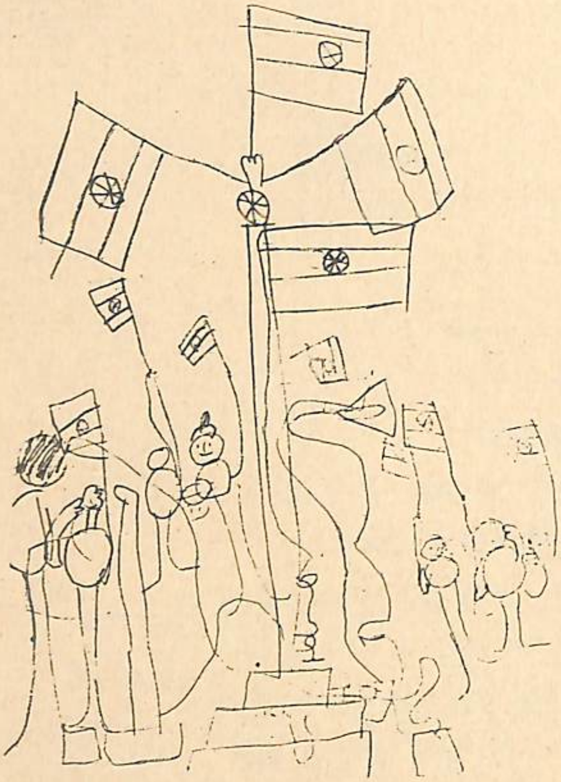

यशोधन गंदगे, ग्यारह वर्ष, भोसरी, पुणे, महाराष्ट्र

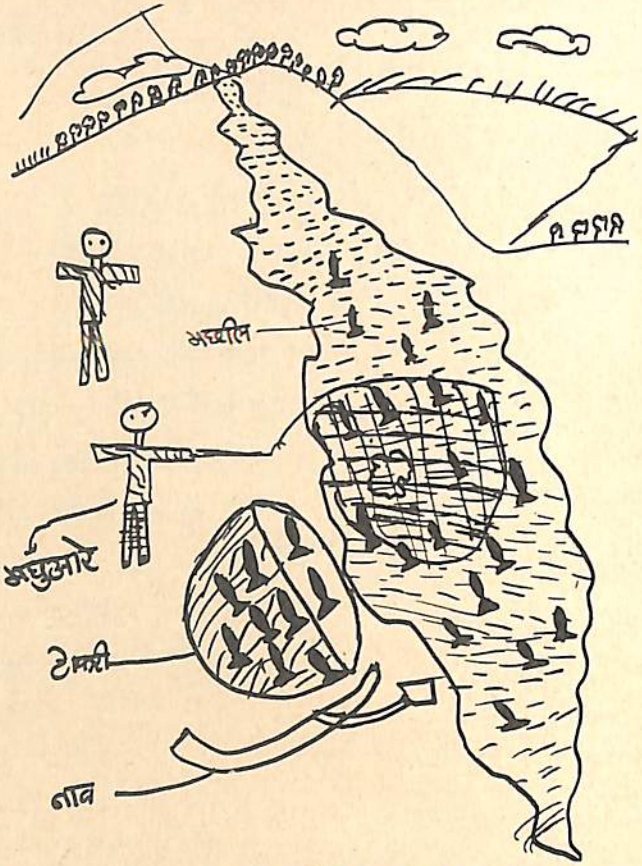

सिद्धार्थ जोशी, दस वर्ष, खरगोन, म.प्र.

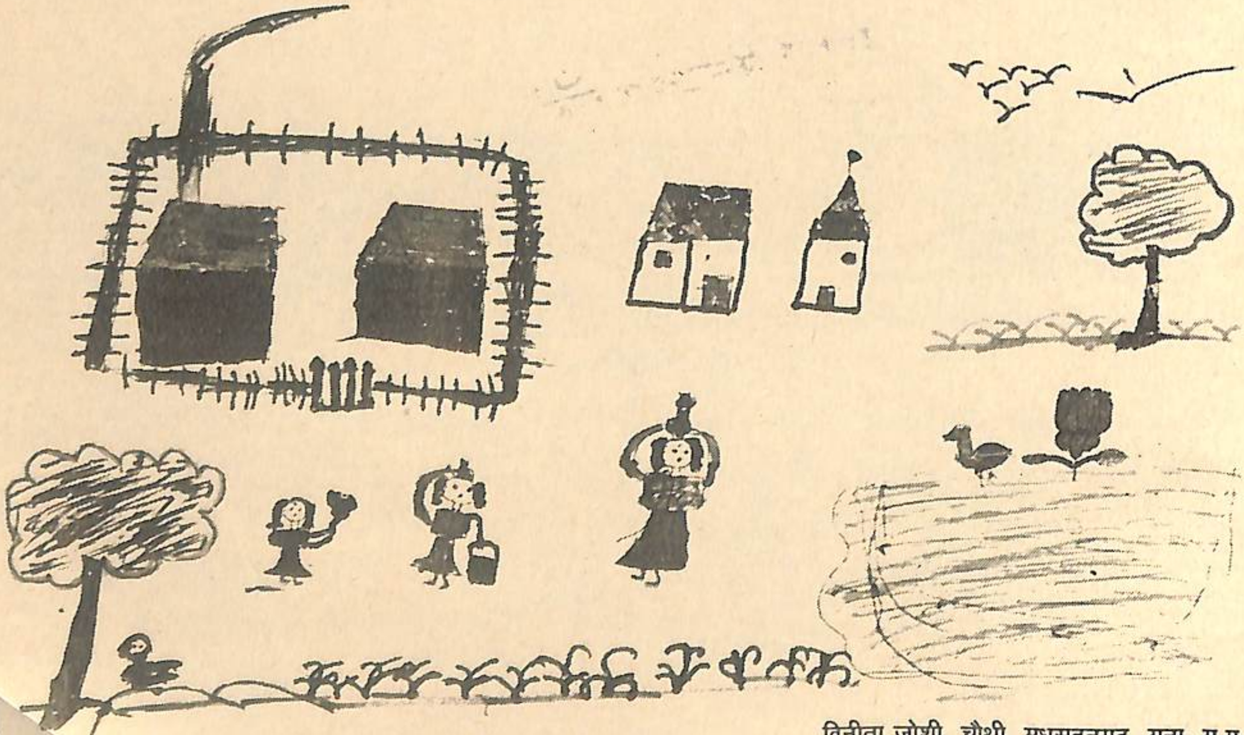

विनीता जोशी, चौथी, मधुसूदनगढ़, गुना, म.प्र.

कल्पना

जागते हुए जब मैं
सपने देखती हूँ
तब मेरा हर सपना
नील गगन में सो जाता है
मस्त बादलों में बिखर जाता है
लेकिन इन सपनों को साकार रूप देने के लिए
मैं अपनी कल्पनाओं की कूँची से
रंग भरती हूँ
तब हर रंग एक दूसरे से
फीके लगने लगते हैं
तब टूट जाते हैं सपने मेरे
चरमरा कर सूनेपन में
फिर लेखनी के माध्यम से
कवयित्री बनने की तमन्ना में
जोड़ तोड़ करके
लगती हूँ तुकबन्दी करने
तब दर्शनिक बन खो जाती हूँ
उलझे विचारों में पंक्तियों का कर सृजन
फिर बिखेर देती हूँ
नव सृजन के लिए
मैं अपने टूटे दिल के खण्डहर में
स्वप्नों की साकार प्रतिमा बनना चाहती हूँ
पर काश! स्वप्न मेरे बिखर न जाएँ!

❑ सोनिया, दसवीं, चण्डीगढ़

कक्षा का एक दिन

लड़कों के कक्षा में घुसते ही शोर शुरू हो गया क्योंकि हमारे पहले पीरियड के सर नहीं आए थे। कुछ देर बाद हमारा प्रथम पीरियड खत्म हो गया और दूसरे पीरियड की शुरुआत हुई। दूसरे पीरियड में हमें संस्कृत पढ़ाई जाती है। हमारे दूसरे पीरियड के सर बहुत ही स्ट्रिक्ट-से हैं। पहला पीरियड बीतने के लगभग पाँच मिनट बाद हमारे दूसरे पीरियड के सर आए। उनके आते ही सारी क्लास में सुनसानी छा गई। ऐसा लग रहा था कि शायद अब दूसरे पीरियड में सर की बिना अनुमति के हवा भी अन्दर से बाहर नहीं जाएगी।

हमारे संस्कृत के पाठ पूरे हो चुके थे। इस लिए सर बोले, ''आज हम तुम्हें हिन्दी पढ़ाएँगे।'' फिर कुछ देर के बाद बोले, ''आज तुम्हारा कौन-सा पाठ है?''

लड़कों ने कहा, ''सर आज पाठ-19 होगा।'' हम लड़कों का इतना ही कहना था कि सर बुरी तरह चौंक गए और बोले, ''क्या कहा अभी तुम्हारे उन्नीसवाँ ही पाठ चल रहा है। अब तो वार्षिक परीक्षाएँ भी शुरू होने वाली हैं।''

तब हम लोग बड़ी निराशा व्यक्त करते हुए बोले, ''तीसरे पीरियड के सर कुछ पढ़ाते तो हैं नहीं बस एक ही पाठ को दूसरी-तीसरी बार दोहराते रहते हैं। जब से छमाही इम्तेहान ख़त्म हुए हैं तब से सर ने हमें केवल एक ही पाठ करवाया है। कविता को तो देखते ही हमारे सर का स्वास्थ्य गिरने लगता है।''

बच्चों के मुँह से इतना कुछ सुनने के बाद सर बोले, ''तुम्हारे तीसरे पीरियड के सर को कुछ आता तो है नहीं बस इधर-उधर की बातें ही ज़्यादा करते रहते हैं। एक दिन मैंने उनसे कहा, 'हमने तो बी.एड. और एम.ए. कर लिया है तुम भी प्राइवेट एम.ए. कर लो' तो बस मेरा इतना कहना था नहीं कि वो मेरे सर पर सवार हो गए। बोले, 'तुम तो क्लास में सोते रहते हो।' मैं बोला, 'अरे भाई हम सोते भी हैं तो क्या हुआ? हम कोई तुम्हारी तरह पूरे साल में दस ही पाठ थोड़े ही पढ़ाते हैं। हम जहाँ भी पढ़ाते हैं पाठ पूरे करवाते हैं कोई कामचोरी थोड़े ही करते हैं।' ये कुछ पढ़ाते तो हैं नहीं बस दिखते लम्बे हैं।''

तब हमारी क्लास का सेकण्ड मॉनीटर बोला, ''सर, वो हेमन्त से कहते हैं कि तू तो हॉफ-माइन्ड है।''

तब सर बोले, ''और वो खुद कैसा है?'' क्लास में सर के मुँह से यह सुनकर सभी के मुँह से हँसी फूट पड़ी। इसके बाद हमारा तीसरा पीरियड लगा। आज तीसरे पीरियड के सर बड़ी जल्दी और तेज़ी से क्लास में आए और फिर दूसरे पीरियड की बातें करने लगे। इसके बाद सर ने मॉनीटर से उन्नीसवें पाठ से एक प्रश्न पूछा। इसके बाद खुद मुझे खड़ा किया। मैंने सचिन की किताब में बना एक चित्र देखा जिसमें रंग भरा हुआ था। मैंने पहले सर के प्रश्न का उत्तर दिया। फिर बोला, ''सर सचिन ने अपनी किताब में बने चित्र में रंग भर रखा है।''

तो वो सचिन से बोले, ''क्यों रे तूने होली शुरू कर दी।''

तब वो मुस्कराकर बोला, ''सर, आज तो रंग पड़ा है मैं आज से होली कैसे खेल सकता हूँ।"

सर बोले ''यह क्या हो रहा है? जा, प्रिंसीपल सर के कमरे में जा और होली खेल ले।''

हमारी क्लास में एक दरवाज़ा है जो कि दूसरी क्लास की तरफ खुलता है। लेकिन वह टूट चुका है। एक क्लास से दूसरी क्लास साफ-साफ दिखती है। उस समय हमारी बगल वाली क्लास में हमारे दूसरे पीरियड के सर बैठे थे। जब उन्होंने दूसरे सर की होली खेलने की बात सुनी तो शायद उनसे भी चुप न रहा गया। बोले, ''सर बिलकुल ठीक कहते हैं। जब इम्तेहान होंगे तो तू यही लिख देना कि सर ने मुझसे होली खेलने के लिए कहा था।''

जब उन्होंने इतना कुछ कह दिया, तो फिर हमारे तीसरे पीरियड के सर भला कैसे चुप रहते। वह बोले, "हाँ, हाँ तुम्हारे दूसरे पीरियड के सर तो बहुत जीनियस, बहुत विद्वान हैं। हममें जितनी भी कमी होगी वो सब पूरी कर देंगे।"

इसके बाद कुछ देर तक बहस चलती रही। फिर घण्टी बजी। अब हमारा चौथा पीरियड था। इस पीरियड के लगते ही दोनों सरों के बीच शान्ति हो गई।

मैं सच कहता हूँ उस वक्त मुझे ऐसा लगा जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपनी शान्ति सेना भेज दी हो।

❑ राकेश चन्द्र पन्त, अल्मोड़ा, उ.प्र.

जब मैं पायलट बना

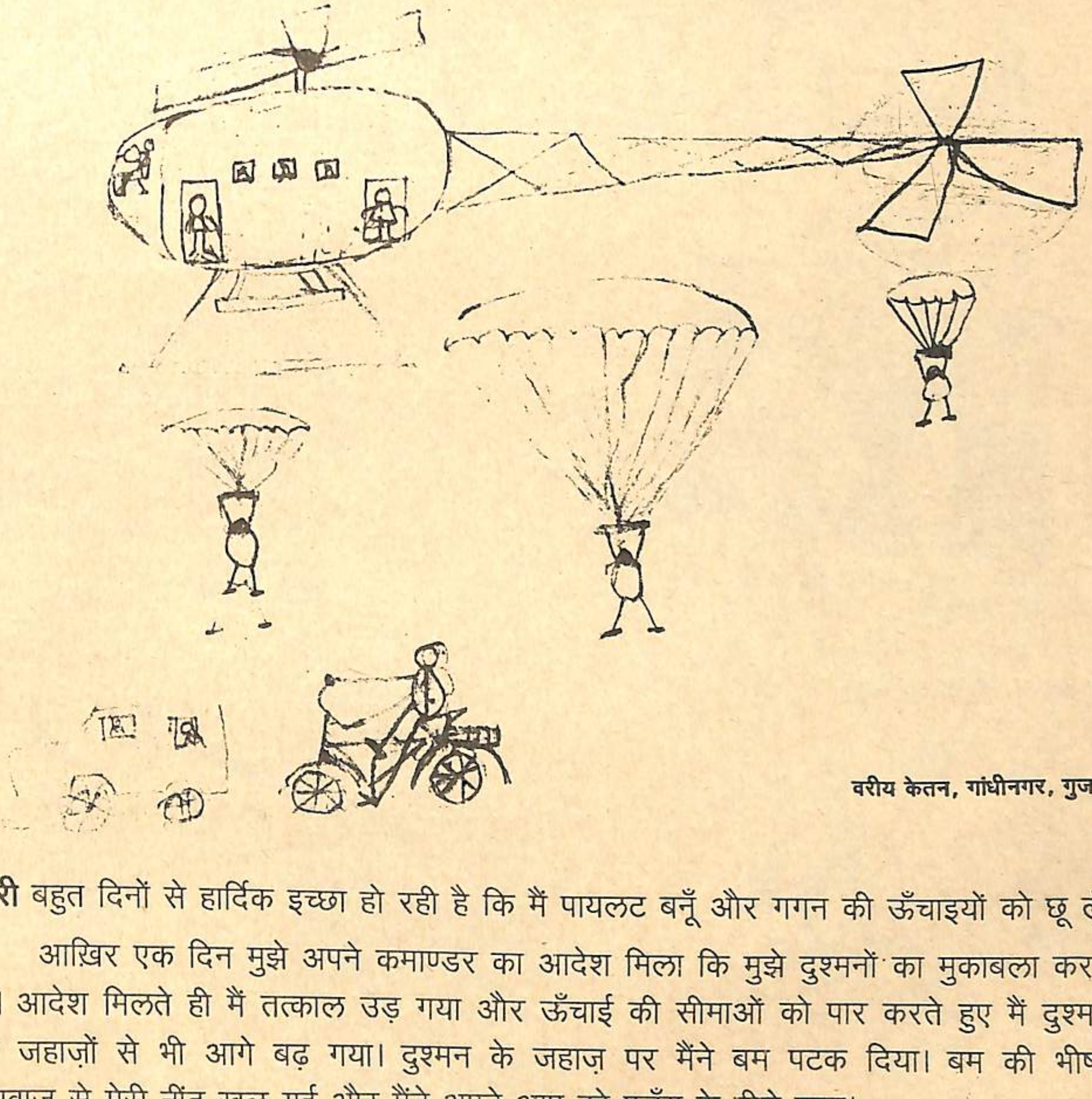

वरीय केतन, गांधीनगर, गुजरात

मेरी बहुत दिनों से हार्दिक इच्छा हो रही है कि मैं पायलट बनूँ और गगन की ऊँचाइयों को छू लूँ।

आख़िर एक दिन मुझे अपने कमाण्डर का आदेश मिला कि मुझे दुश्मनों का मुकाबला करना है। आदेश मिलते ही मैं तत्काल उड़ गया और ऊँचाई की सीमाओं को पार करते हुए मैं दुश्मनों के जहाज़ों से भी आगे बढ़ गया। दुश्मन के जहाज़ पर मैंने बम पटक दिया। बम की भीषण आवाज़ से मेरी नींद खुल गई और मैंने अपने आप को पलँग के नीचे पाया।

❑ धीरेन्द्र श्रीवास्तव, पाँचवीं, बालाघाट, म.प्र.

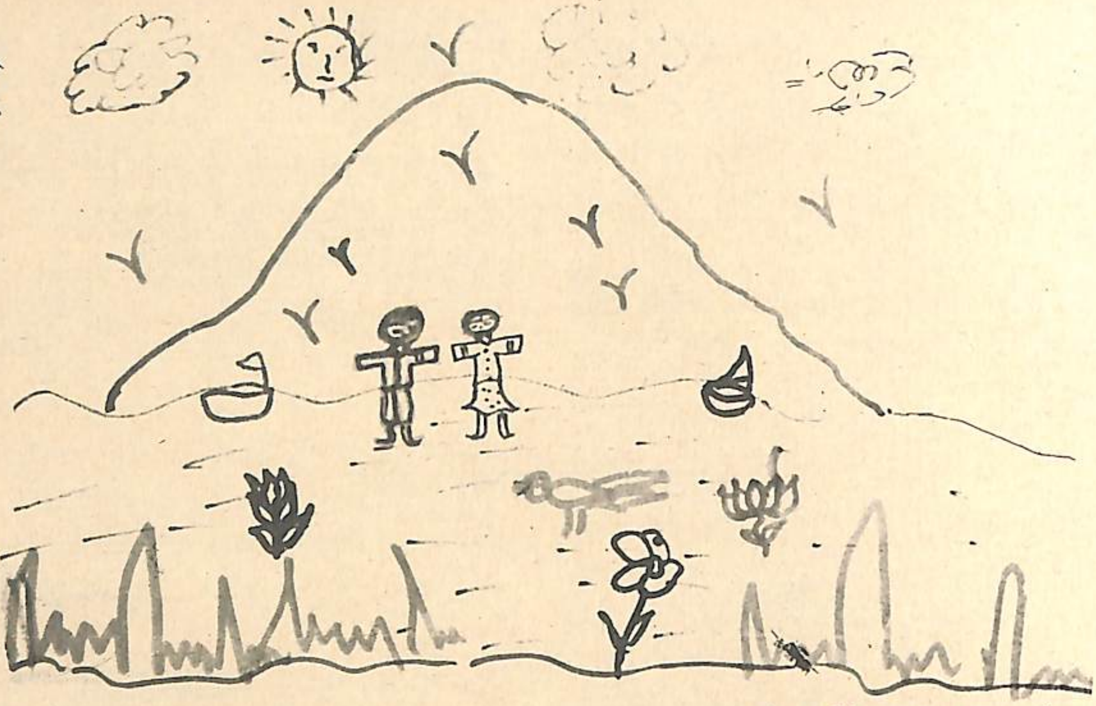

शोभा सरोदे, सातवीं, सियावा, बैतूल, म.प्र.

श्वेता पोद्दार, जहानाबाद, बिहार

ज्योति कुमार

करुणा, चौथी, सुल्तानपुर, दिल्ली

नमो कुमारी शाक्य,
चौथी, रायपुर, म.प्र.

मनीष, हरदा, म.प्र.

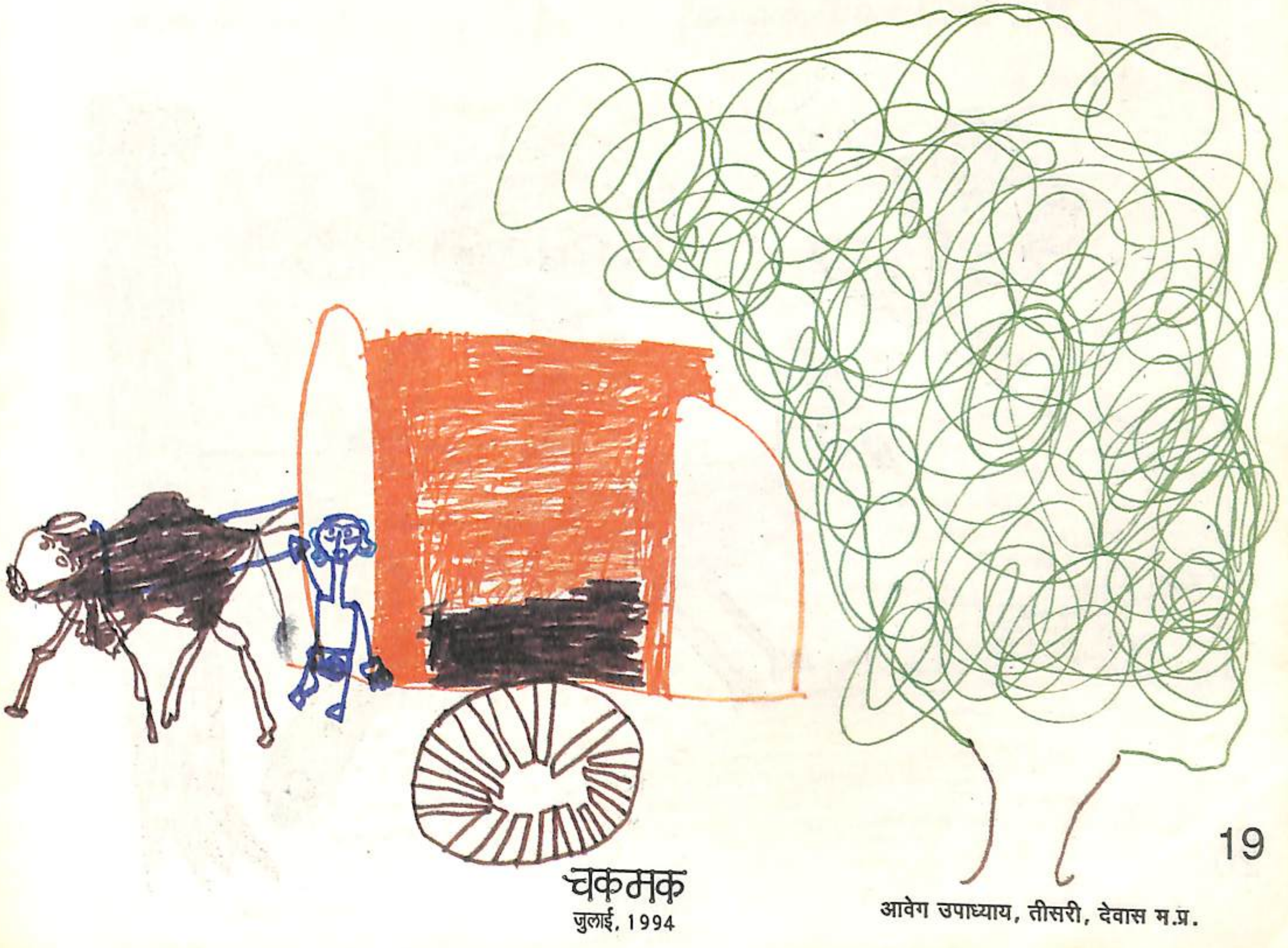

आवेग उपाध्याय, तीसरी, देवास म.प्र.

वैभव जेम्स, धार, म.प्र.

शीबा, आठवीं, भोपाल, म. प्र.

कदम बढ़ाओ

उद्देश्य

गिनती नाम व क्रम सीखना।

सामग्री

कक्षा में खुली जगह जहाँ फर्श पर चॉक से 4-5 गिनती पथ बनाए जा सकें।

पांसे

बच्चों की संख्या

हरेक गिनती पथ के लिए एक-एक बच्चा।

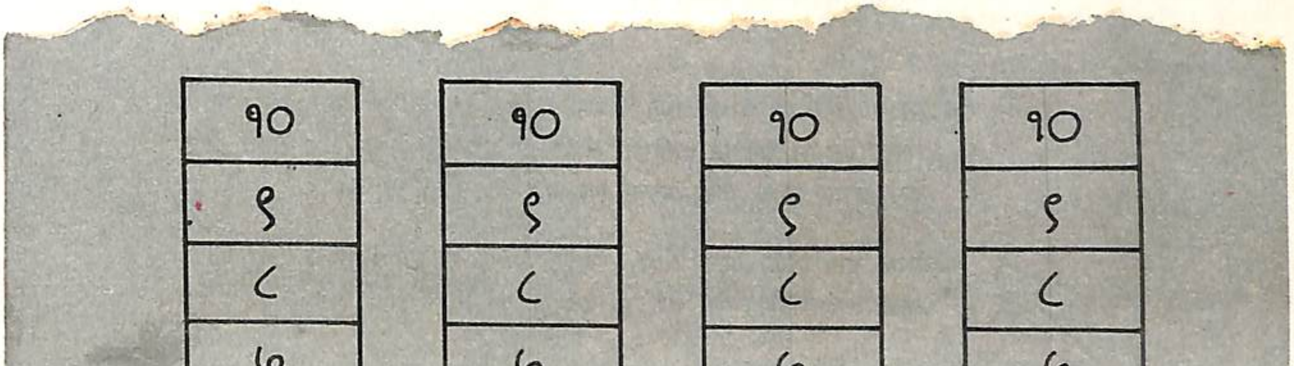

बच्चे पंक्ति में खड़े होते हैं। हर बच्चे के सामने फर्श पर 'गिनती पथ' बनाया जाता है। (यथा संभव खानों की लम्बाई सभी बच्चों के लिये बराबर हो)। क्रम से बच्चे पांसा फेंकते हैं और उसकी बिन्दुएँ गिनकर उतने खाने चलते हैं। जो 'गिनती पथ' के अन्त तक सबसे पहले पहुँचता है वह जीत जाता है।

खेल के दौरान 'कौन किस अंक पर खड़ा है? कौन आगे है, कौन पीछे है, कौन सा अंक 'ज्यादा है' या 'कम है', इस अंक के बाद अब कौन सा अंक आएगा। इस तरह की चर्चा के माध्यम से अंकों के परस्पर संबंध, बच्चों के मन में साफ हो सकते हैं। पथ की लम्बाई बच्चों की संख्या ज्ञान के अनुसार बढ़ाई जा सकती है।

शिक्षकों को बच्चों की गिनती ज्ञान के अनुसार 'गिनती पथों' को फर्श पर स्पष्ट ढंग से बनाना चाहिए। संभव हो तो एक काफी बड़ा पांसा (गत्ते का) बनाएं ताकि सभी बच्चों को अंक दिखे।

स्वयं भाग लेना, और 'आगे', 'पीछे', 'कम', 'ज्यादा' की अवधारणाओं से बच्चों को परिचित करवाना।

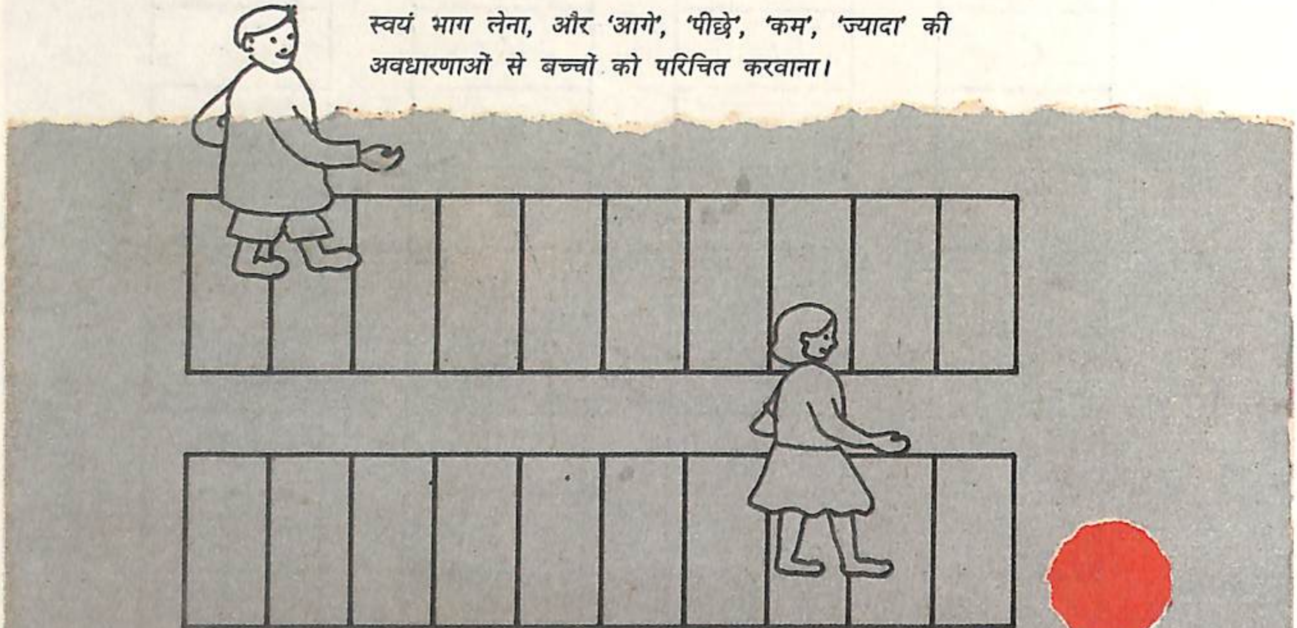

□ दीप्ति वैद्य
इन्डस्ट्रियल डिज़ाइन सेन्टर, बम्बई

मुन्गा या सहजन

सहजन या मुन्गे की फली तो तुम सभी ने खाई होगी। कभी दाल के साथ कभी आलू के साथ तो कभी अकेले ही। बहुत स्वादिष्ट होती है इसकी तरकारी। सहजन का पेड़ भारत में लगभग सभी जगहों पर मिलता है। पश्चिमी हिमालय में तो इसके जंगल पाए जाते हैं।

मंझोले कद का यह पेड़ देखने में बहुत सुन्दर होता है। इस पेड़ को बहुत आसानी से कहीं भी उगाया जा सकता है। किसी शाखा को मिट्टी में गाड़ देने से ही वह शाखा पेड़ बनकर एक वर्ष में ही फलने-फूलने लगती है। बीज से पेड़ तैयार करने में बहुत समय लगता है।

इसके पत्ते पेड़ की सभी डालों पर छाए रहते हैं। ये बहुत-सी छोटी-छोटी पत्तियों में बँटे होते हैं। देखने में सुन्दर, कोमल पत्तियाँ जाड़ों में झड़ जाती हैं। बसंत आने के साथ ही पेड़ फिर पत्तियों से भर जाता है। बसंत में पत्तियाँ आने के साथ ही फूल भी खिलने लगते हैं। इसके फूल छोटे-छोटे सुगन्धित और सफ़ेद या हल्का-सा पीलापन लिए होते हैं। फूल गुच्छों में लगते हैं। इसके बाद गुच्छों में ही बड़ी-बड़ी लम्बी पतली फलियाँ लगती हैं। इनके भीतर बहुत से बीज होते हैं। बीज फली में एक कतार में लगे होते हैं।

सहजन या मुन्गा की दो क़िस्में हैं। एक क़िस्म वो जो साल भर फल देती है, और दूसरी वो जो थोड़े-थोड़े दिन बाद फल देती है।

मुन्गा की फली सारे भारत में आमतौर पर खाने के ही उपयोग में लाई जाती है। बंगाल और तमिलनाडु में तो यह बहुत लोकप्रिय है। वहाँ पेड़ की पत्तियाँ, फूल और टहनी तक खाने के काम में लाई जाती है। फूलों से अचार बनाते हैं। फूल और पत्ती विटामिन वाली माने जाते हैं। दही, कढ़ी में पत्तियाँ डालते हैं। फूल-फल और पत्ती के अलावा पेड़ के और भी हिस्से अलग-अलग तरह के कामों में प्रयुक्त होते हैं।

पेड़ की छाल के रेशों से काग़ज़ व चटाई बनाए जाते हैं। तने से गोंद निकाली जाती है। जो कई दवाईयों में काम आती है। जड़ों से तेल निकाला जाता है, जो सरसों के तेल जैसा होता है। इसलिए उसे कई लोग सरसों के तेल की जगह काम में लाते हैं।

इसके पेड़ पर मधुमक्खियाँ पाली जाती हैं। बीजों से निकाला गया तेल इत्र बनाने में काम आता है।

पेड़ के अलग-अलग हिस्से अलग-अलग तरह के रोग में दवाई की तरह काम आते हैं। इसकी लकड़ी बहुत मुलायम होती है, इसलिए यह किसी काम में नहीं आती पर इसके अलावा लगभग हर हिस्सा किसी न किसी काम में आता ही है। इसकी फलियाँ लम्बी-पतली होने के कारण इसे अंग्रेज़ी में ड्रमस्टिक (**Drumstick**) कहते हैं।

क़िस्सा आफ़न्ती का

चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

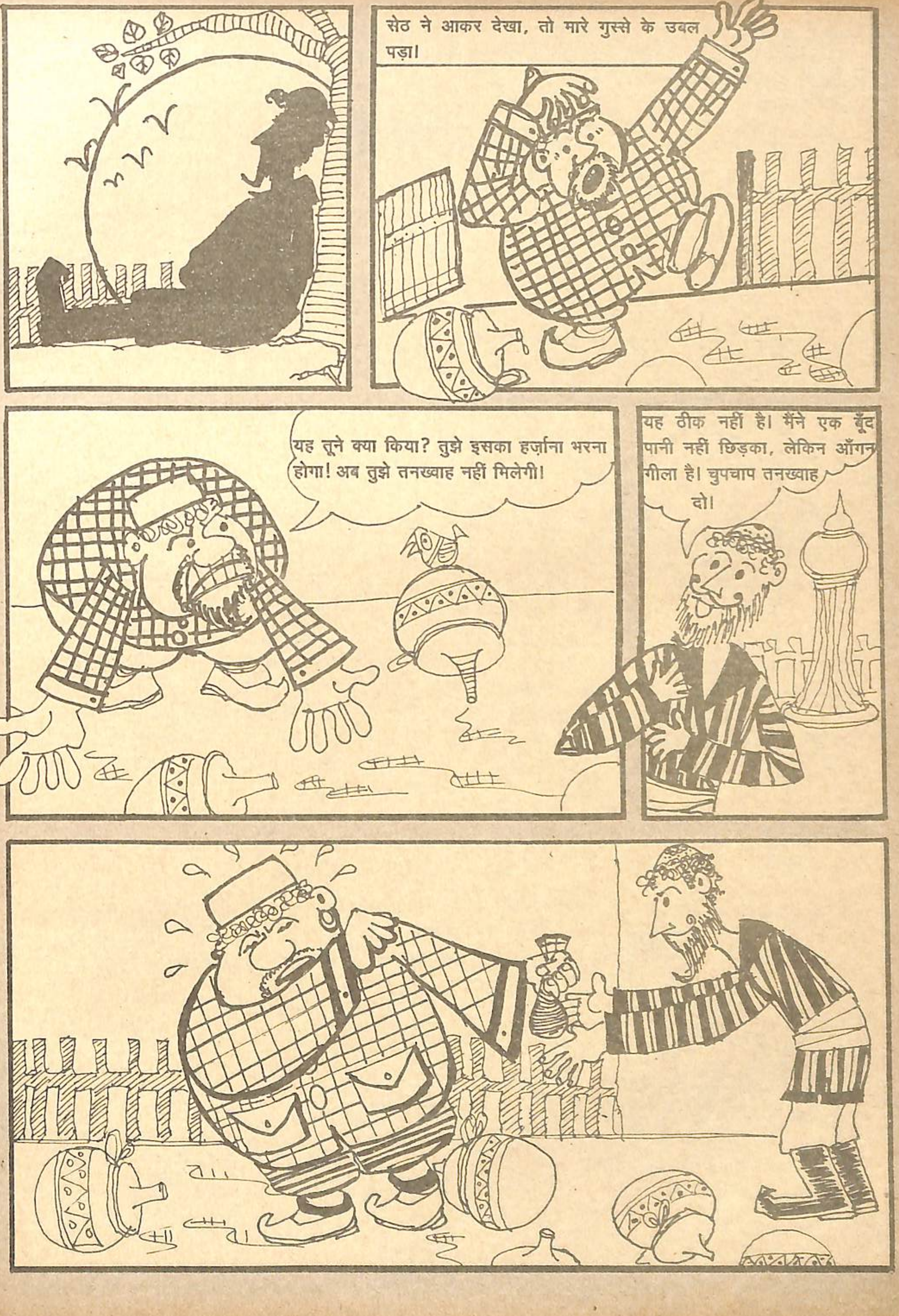

सेठ ने आकर देखा, तो मारे गुस्से के उबल पड़ा।
यह तूने क्या किया? तुझे इसका हर्ज़ाना भरना होगा! अब तुझे तनख्वाह नहीं मिलेगी।
यह ठीक नहीं है। मैंने एक बूँद पानी नहीं छिड़का, लेकिन आँगन गीला है। चुपचाप तनख्वाह दो।

सूपा बनाओ

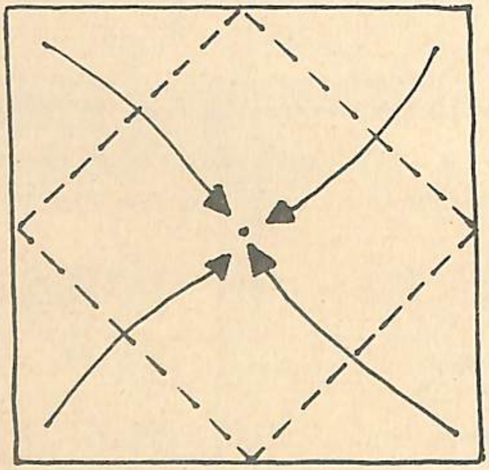

1. एक वर्गाकार कागज़ लो। इसके चारों कोनों को बीच में लाकर मिलाना है। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से कोनों को तीर की दिशा में मोड़ लो।

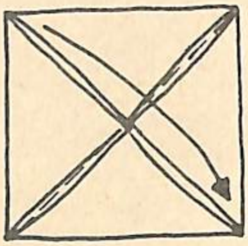

2. अब जो आकृति तुम्हारे पास है वो भी एक वर्ग ही है पर पहले से छोटा। अब इसको चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ लो। निशान पक्का करके मोड़ वापस खोल लो।

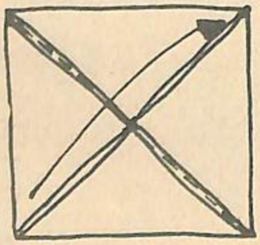

3. एक बार फिर से चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से मोड़ बनाकर निशान पक्का करके मोड़ वापस खोल लो।

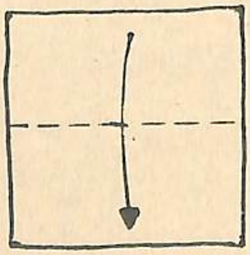

4. अब कागज़ को पलट लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो। निशान पक्का करके मोड़ वापस खोल लो।

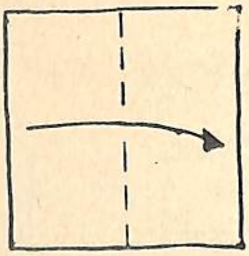

5. एक बार और चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो और निशान पक्का करके मोड़ वापस खोल लो। फिर आकृति को पलट लो।

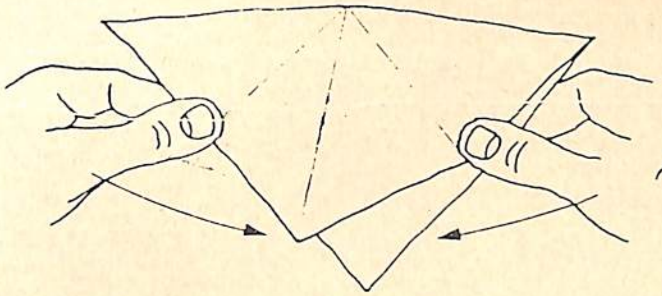

6. अब इस आकृति को चित्र में दिखाए तरीके से पकड़ो। और काग़ज़ को पकड़े रखकर अपनी ऊंगलियाँ पास-पास लाओ।

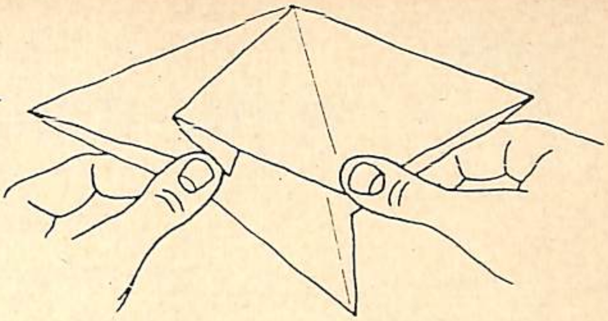

7. इस तरह।

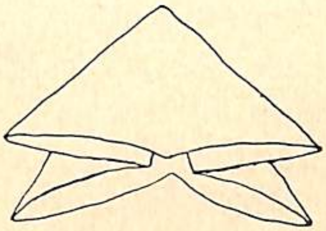

8. देखो ऐसी आकृति मिल गई न।

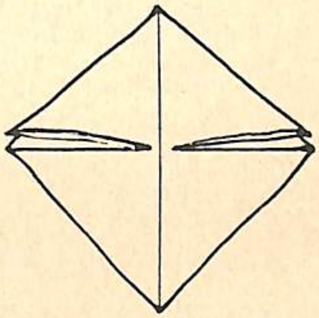

9. अब इस आकृति को नीचे रखकर नीचे वाले तिकोन को जो कि अन्दर की तरफ मुड़ा है बाहर निकाल लो। इस चित्र में जैसी आकृति दिखाई दे रही है वैसी ही तुम्हारे पास भी बन गई होगी।

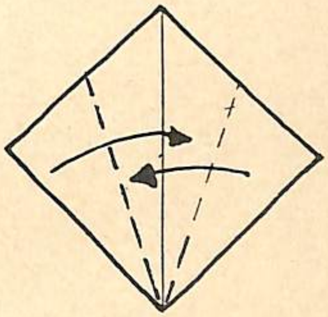

10. इस आकृति को पलट लो। अब इस चित्र के अनुसार टूटी हुई रेखाओं पर से तीर की दिशा में दोनों किनारों को मोड़ लो। मोड़े हुए सिरों को एक दूसरे में फँसा दो।

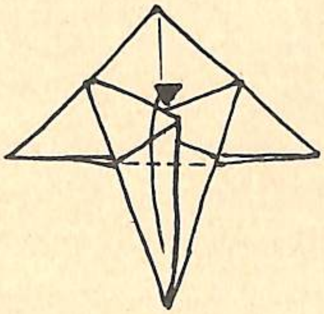

11. इस तरह। अब इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से नीचे के तिकोन को तीर की दिशा में मोड़ो। फिर तिकोन के बचे हुए हिस्से को ऊपर की जेब के अन्दर मोड़ दो।

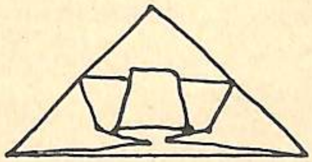

12. ऐसी आकृति मिलेगी। अब इस आकृति में से जेब को पकड़ लो और बाकी आकृति को धीरे-धीरे चौड़ा करो। थोड़ी जुगत तुम भी लगाओ।

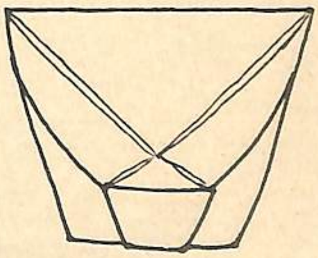

13. ऐसी आकृति बननी है। देखो तो यह क्या है?

मनुष्य महाबली कैसे बना!

खोज जारी है।

पुरातत्त्वविद जब खण्डहर में खुदाई करता है, तो वह आम तौर पर ऊपर से शुरू करता है और नीचे की तरफ बढ़ता जाता है - सबसे पहले सबसे ऊपरी परतों की जाँच की जाती है, फिर वह अधिकाधिक नीचे की तरफ, धरती में और-और गहरे, इतिहास की गहराई में खोदता चला जाता है। पुरातत्त्वविद मानो किताब को उलटा पढ़ रहा है, बिलकुल अन्तिम अध्याय के अन्त से शुरू करके पहले अध्याय पर समाप्त कर रहा है। हमने अपनी कहानी को दूसरे तरीके से शुरू किया है। हमने सबसे नीचे की परतों से, गुफा के इतिहास के सबसे पहले अध्यायों से, शुरुआत की है। और अब हम अधिकाधिक ऊपर की ओर जाएँगे, आधुनिक काल के अधिकाधिक निकट आते जाएँगे।

परतों का अध्ययन करने पर हम देखते हैं कि लोगों ने गुफा को कई बार छोड़ा और कई बार उसमें लौटकर वापस आए। जब गुफा में आदमी नहीं रहते थे, तो उसमें लकड़बग्घे और रीछ आकर रहने लगते थे, उसके भीतर मिट्टी और धूल की परतें जमा होती जाती थीं। छत की चट्टान के टुकड़े गुफा के फर्श पर गिरते रहते थे, और कई वर्षों के बाद, जब कोई नया कबीला फिर उसे ढूँढ़ता था, तो वहाँ उसके पुराने निवासियों के कोई सुराग नहीं मिलते थे।

कितने ही वर्ष और शताब्दियाँ और सहस्राब्दियाँ बीत गईं। लोगों ने बाहर खुले में मकान बनाना शुरू कर दिया, उन्होंने प्राकृतिक आश्रयों का उपयोग करना बन्द कर दिया। गुफा आख़िर पूरी तरह से तज दी गई। हाँ, कभी-कभार बीच-बीच में हरी-भरी पहाड़ी चरागाहों में अपने रेवड़ चराते चरवाहे दिन दो दिन के लिए उसमें ठहर जाते, या बारिश में फँसे मुसाफिर गुफा में बसेरा ले लिया करते।

और फिर गुफा के इतिहास के अंतिम अध्याय का आरम्भ हुआ। लोग एक बार फिर गुफा में आए। लेकिन इस बार वे आश्रय लेने के लिए नहीं आए, वे इस गुफा में जो लोग कभी रहते थे, उनके बारे में (जितना हो सकता था, उतना) जानने के लिए आए थे।

बाद में आने वाले ये लोग प्राचीन काल के पत्थर के औज़ारों को खोदने के लिए इस्पात के आधुनिक औजारों से लैस होकर आए थे।

और परत के बाद परत को खोदकर इन अनुसंधानकर्ताओं ने गुफा के इतिहास को आदि से अन्त तक पढ़ लिया।

उन्हें जो औज़ार मिले थे, उनकी तुलना करके वे देख सकते थे कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी किस प्रकार विभिन्न हुनरों और अनुभव में वृद्धि होती

गई थी। उन्होंने देखा कि भद्दे औज़ारों की जगह दूसरे औज़ारों ने ले ली थी, जो प्रागैतिहासिक काल के बीतते जाने के साथ अधिकाधिक अच्छे और बहुरूपी होते चले गए थे। जैसे भद्दे कुल्हाड़े की जगह पहले तिकोने चाकुओं और अर्धगोलाकार खुरचनियों ने ले ली और बाद में चकमक के सुघड़ टुकड़ों से बने तरह-तरह की अनियाँ, खुरचनियाँ, बरमे और सूए आ गए। इसके बाद नई चीज़ों - हड्डी और बारहसिंघे के सींगों - के बने औज़ार चकमक के औज़ारों के नियमित संकलन में सम्मिलित हो गए। हड्डी, जानवरों की खालों और लकड़ी पर काम करने के लिए विशेष औज़ार थे। प्रागैतिहासिक मनुष्य हड्डियों को काटने का औज़ार, खोलों की खुरचनी और लकड़ी में छेद करने का बरमा बनाने के लिए उसी चकमक का उपयोग करता था। उसके कृत्रिम पंजे और दाँत समय के साथ अधिक तेज़ और कई प्रकार के होते जा रहे थे और जिस हाथ का इस्तेमाल वह अपना शिकार पकड़ने के लिए करता था, वह लम्बा होता जा रहा था।

लम्बा हाथ

जब प्रागैतिहासिक मानव ने डण्डे में चकमक की अनी लगाकर भाला बनाया, तो उसने अपने हाथ को लम्बा बना लिया।

इसने मनुष्य को अधिक शक्तिशाली और ज़्यादा बहादुर बना दिया।

पहले, अगर उसका अचानक रीछ से सामना हो जाता था, तो वह मारे डर के भाग खड़ा होता था। छोटे से जानवर को वह बिना किसी ख़ास परेशानी के पकड़ और मार सकता था, लेकिन रीछ से भिड़ने की उसमें हिम्मत न थी। वह जानता था कि रीछ के तेज़ पंजों से वह कभी नहीं बच सकता।

लेकिन यह तब की बात है, जब मनुष्य के पास दोहरे फलोंवाला भाला नहीं था। भाले ने उसे अधिक साहसी बना दिया। रीछ को देखकर अब वह डर के मारे भागता नहीं था, साहस के साथ उस पर खुद हमला करता था। रीछ शिकारी पर हमला करने के लिए अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता था। लेकिन इसके पहले कि उसके नख मनुष्य तक पहुँच पाएँ, शिकारी का दोहरे फलों वाला भाला उसके झबरे पेट में घुस जाता था, क्योंकि भाला रीछ के पंजों से कहीं लम्बा होता था।

घायल रीछ मारे गुस्से के आगे झपटता, जिससे दोहरे फलों वाला भाला उसके पेट में और भी गहरा धँस जाता। लेकिन शिकारी का भाला अगर टूट जाता, तो उसे बचने का कोई मौका न था।

तब रीछ उस पर टूट पड़ता और पंजे मार-मारकर उसे मार डालता।

लेकिन रीछ मुश्किल से ही कभी विजेता होता था। हमें याद रखना चाहिए कि प्रागैतिहासिक काल में आदमी कभी अकेला शिकार करने नही जाता था। आगाही की पहली आवाज़ पर पूरा-का-पूरा गिरोह लपका चला आता था। लोग रीछ पर पिल पड़ते थे और उसे अपने पत्थर के छुरों से मार डालते थे।

दोहरे फलों वाले भाले ने प्रागैतिहासिक मानव को ऐसा शिकार दे दिया, जिसका वह पहले स्वप्न भी नहीं देख सकता था। पुरातत्वविदों को अभी तक गुफाओं के भीतर पत्थर की सिल्लियों के बने गोदाम मिलते हैं। जब पत्थर की सिल्लियाँ अलग की जाती हैं, तो उनके नीचे रीछ की हड्डियों के बड़े-बड़े ढेर नज़र आते हैं। इसका मतलब सिर्फ़ यही हो सकता है कि शिकारी सफल हुए थे, क्योंकि उनके पास इतना माँस होता था कि उसे जमा करके रखा जा सकता था।

अगर आदमी रीछ जैसे भारी-भरकम और सुस्त जानवरों का ही शिकार करता होता, तो दोहरे फलों वाला भाला सभी सम्भव हथियारों में सबसे अच्छा रहता। लेकिन उसे और जानवरों का भी शिकार करना पड़ता था, ऐसे जानवरों का, जो स्वयं उसकी अपेक्षा कहीं तेज़ और फुर्तीले थे।

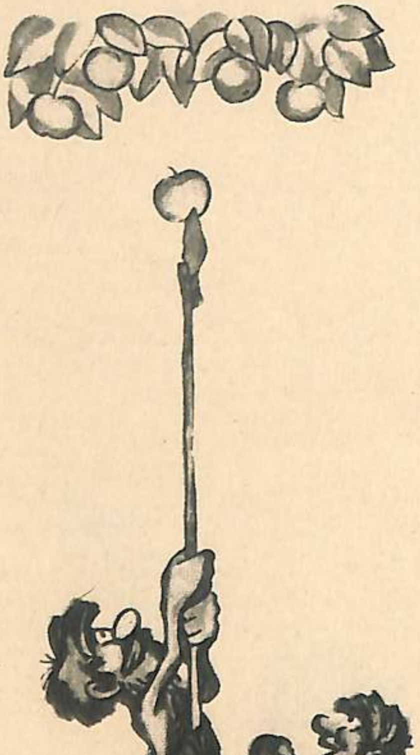

मैदानों में घूमते समय शिकारियों का सामना जंगली घोड़ों और बाइसनों के झुण्डों से होता। वे चरते जानवरों की तरफ सरककर जाते, लेकिन पहली आहट या शोर सुनते ही पूरा झुण्ड धड़धड़ाता हुआ दूर भाग खड़ा होता।

इन जानवरों का शिकार करने के लिए प्रागैतिहासिक मनुष्य के हाथ अभी तक छोटे थे। लेकिन फिर स्वयं शिकार ने उसे एक नई और मज़बूत सामग्री प्रदान की - हड्डी।

उसने अपने चकमक के चाकू से हड्डी की एक हलकी और तेज़ अनी बनाई, जिसे उसने अब लकड़ी के छोटे से डण्डे से बाँध दिया। अब उसके पास एक नया हथियार था - नेज़ा। शिकारी दौड़ते घोड़े पर कभी अपना भारी दोहरे फलों वाला भाला नहीं फेंक सकता था, लेकिन वह अपना हलका नेज़ा उस पर फेंक सकता था और दूर तक फेंक सकता था।

अब आदमी का हाथ और भी लम्बा हो गया। एक हवाई हथियार - नेज़े- के उपयोग द्वारा शिकारी भागते घोड़े को उसे भाग जाने का मौका दिए बिना मार सकता था।

ठीक है कि चलते निशाने को मारना आसान नहीं था। इसके लिए आदमी को शक्तिशाली हाथ और पैनी निगाह दरकार थी।

शिकारी नेज़ा फेंकना बचपन में ही सीख लेता था। फिर भी यह कोई असाधारण बात नहीं थी कि फेंके गए सौ नेज़ों में से बस दर्ज़न

भर ही अपने निशाने पर जाकर बैठें।

सदियाँ हज़ारों वर्षों में बदल गईं। जंगली घोड़ों और बाइसनों के झुण्ड दुर्लभ होते जा रहे थे और प्रागैतिहासिक मनुष्य ही उनके विनाश का सबसे बड़ा कारण था। अब अधिकाधिक अवसरों पर शिकारी खाली हाथ ही घर वापस आते। उन्हें एक नए हथियार की ज़रूरत थी, एक ऐसे हथियार की, जो और भी ज़्यादा दूर के निशाने पर पहुँच सके। प्रागैतिहासिक मानव के लिए किसी और चीज़ का, किसी ऐसी चीज़ का आविष्कार करना आवश्यक था, जो उसके हाथ को और भी लम्बा बना दे।

और उसने एक नए हथियार का आविष्कार कर लिया।

उसने एक पतले, मज़बूत पौधे को काटा, उसके तने को मोड़कर कमान का रूप दिया और सिरों को एक डोरी से बाँध दिया।

अब शिकारी के पास धनुष था।

जब वह प्रत्यंचा को धीरे-धीरे खींचता, तो वह उसकी तनी हुई पेशियों की समस्त शक्ति को एकत्र कर लेती।

और जब वह उसे छोड़ देता तो वह तुरन्त अपनी शक्ति बाण को प्रदान कर देती। और बाण शिकार के लिए झपट्टा मारते बाज की तरह उड़ चलता।

नेज़े के मुकाबले बाण कहीं ज़्यादा दूर तक जाता था। बाण और नेज़ा दो भाइयों की तरह एक से हैं, लेकिन बाण अपने भाई से हज़ारों साल छोटा है।

प्रागैतिहासिक मानव को बाण बनाने में हज़ारों साल लग गए।

आरम्भ में वह धनुष से बाण नहीं, नेज़ा फेंका करता था। और इसी कारण उसे बड़े-बड़े धनुष बनाने पड़ते थे। कुछ तो मनुष्य जितने ही लम्बे हुआ करते थे।

इस प्रकार मनुष्य ने अपने अशक्त, छोटे हाथ को लम्बा और शक्तिशाली बनाया। जब उसने बारहसिंघे के सींगों के सिरे या मैमथ के दांत से तेज़ अनी बनाना सीख लिया, तो उसने जानवरों के ही हथियारों - उनके सींगों और दाँतों - को उन्हीं के खिलाफ़ मोड़ दिया। और इसने मनुष्य को सभी प्राणियों में सबसे शक्तिशाली बना दिया।

जो हाथ नेज़े को फेंकता और धनुष की प्रत्यंचा को खींचता था, वह अब कोई साधारण हाथ न रहा था, अब वह एक भीमकाय प्राणी का हाथ था।

(अगले अंक में जारी)

'मनुष्य महाबली कैसे बना!' से साभार
प्रस्तुति : राजेश उत्साही

माथापच्ची

(1)

चकमक क्लब के सदस्यों की बैठक थी। मीना अपने घर के सबसे छोटे चौकोर कमरे में बैठक रखना चाहती थी। पर वो यह भी चाहती थी कि क्लब के दसों सदस्य इस तरह बैठें कि कमरे की हर दीवार के सहारे बैठे लोगों की संख्या बराबर हो। उसने तो माथापच्ची करके हल निकाल लिया। अब तुम भी ढूँढो।

(2)

आगरा से झांसी जाने वाली एक यात्री गाड़ी 60 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ़्तार से चलती है और रास्ते मे कहीं भी रुकती नहीं है। जिस समय यह गाड़ी आगरा से छूटी ठीक उसी समय झांसी से आगरा जाने के लिए एक और यात्री गाड़ी झांसी से छूटी। यह गाड़ी भी रास्ते मे कहीं नहीं रुकती पर यह 40 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ़्तार से चलती है। दोनों गाड़ियाँ आपस में क्रॉस होने के एक घण्टे पहले कितनी दूरी पर रही होंगी? जल्दी से सोचकर बताओ।

(3)

झटपट तीन ऐसे अंक सोचकर बताओ जिनका जोड़ और गुणनफल बराबर हो।

(4)

आठ माचिस की काड़ियाँ लो - 4 पूरी और 4 आधी। और इन्हें जमाकर तीन समान क्षेत्रफल के वर्ग बनाओ।

(5)

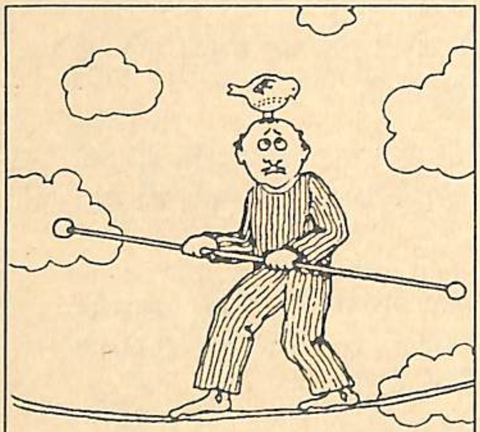

यह बाज़ीगर एक बहुत ही आम करतब दिखा रहा है। रस्सी पर आसानी से यूँ चलने के लिए जो सरल-से विज्ञान की शर्तें लागू होती हैं वो क्या हैं? क्या तुम्हें मालूम हैं? नीचे के सवालों के सही-सही जवाब दो तो जानें:

1. सही सन्तुलन के लिए हाथ में पकड़ा बाँस लम्बा होना चाहिए या छोटा?

2. हल्के बाँस से सन्तुलन बनाना आसान होगा या भारी बाँस से?

3. सीधा, सख़्त बाँस सन्तुलन बनाने के लिए अच्छा साबित होगा या ऐसा बाँस जो नीचे की ओर झुक जाता हो?

(6)

हामिद चुपचाप बैठने वाले लड़कों में तो था नहीं। कुछ-न-कुछ खुराफात हमेशा करता रहता। एक दिन अपनी छोटी हो गई पेंसिल से तंग आकर उसने एक नई पेंसिल निकाल ली। उसने ग़ौर किया कि छोटी पेंसिल बड़ी की ठीक आधी लम्बाई की थी। अब उसे सूझा कि दोनों पेंसिलों को बराबर नाप का बनाना चाहिए। उसने दोनों पेंसिलों को बीच से काटा और उनके टुकड़े आपस में जोड़ दिए – एक बड़ा टुकड़ा और एक छोटा। जो पेंसिलें बनीं वे दोनों पहले की छोटी पेंसिल से 2 इंच लम्बी थीं। अब बताओ शुरू की छोटी और बड़ी पेंसिलों की लम्बाई कितनी-कितनी रही होगी।

(7)

एक आदमी स्टीमर से बम्बई से गोआ जा रहा था। स्टीमर में डेक पर बैठकर शरबत पीते हुए उसे एक मज़ेदार बात सूझी। वो यह कि अगर वह शरबत में तैरते बर्फ के टुकड़े को बाहर समुद्र के पानी में फेंक दे तो क्या होगा? पानी का तल कब बढ़ेगा?

- जब टुकड़ा पानी में गिरे तब?
- या जब वह पूरी तरह पिघल जाए तब?

(8)

उत्तरप्रदेश - बिहार की सीमा पर बहने वाली एक नदी में यात्रियों से भरी एक नाव पलट गई। उसमें बैठे सात लोग तो डूब गए। कोई घायल नहीं हुआ। नदी के एक तट पर बिहार है, दूसरे पर उ.प्र.। बाकि बचे हुए यात्रियों को किस प्रदेश के अस्पताल मे भर्त्ती किया जाएगा?

(9)

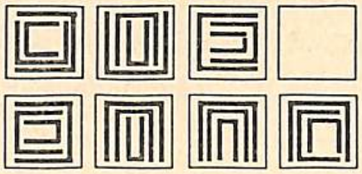

ऊपर वाले चौकोर डिब्बों में जो चित्र हैं उनमें एक क्रम है। क्रम पता लगाकर नीचे के डिब्बों में से वह चित्र छाँटो जो ऊपर के खाली खाने में आएगा।

(10)

पिछले इतवार को रामदीन ने अपने आम के बाग की सफाई की। कुएँ के बाईं ओर के छोटे वाले हिस्से में उसने सूखी पत्तियों की 27 ढेरियाँ जमाईं और दाईं ओर के बड़े वाले हिस्से में 39 ढेरियाँ। इन सबको मिलाने पर कुल कितनी ढेरियाँ बनेंगी?

वर्ग पहेली - 37

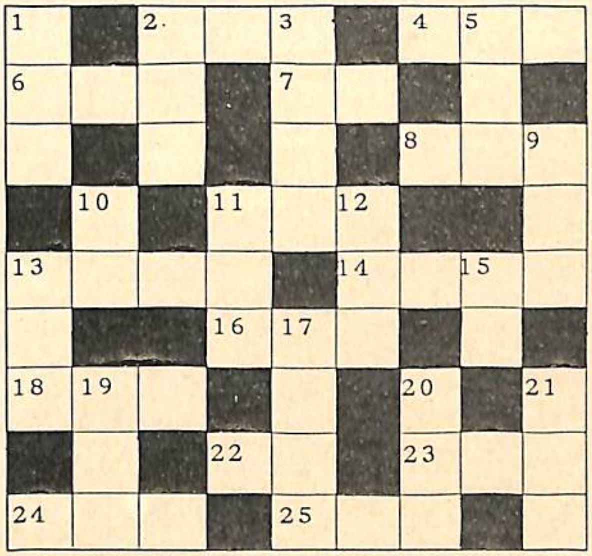

संकेत : बाएँ से दाएँ

2. स्व. राजकपूर की एक प्रसिद्ध फिल्म (3)
4. एक पाल नौका में छिपा है मस्तक (3)
6. पहाड़ (3)
7. झूठ का उल्टा (2)
8. नीम . . . . . ., ख़तरा-ए-जान! (3)
11. गड़बड़ सहला मशविरा (3)
13. आदमी और शेर (4)
14. ना, 'राज़ न खोलना में ढूँढो उपहार (4)
16. न बूढ़ा, न बच्चा (3)
18. परख या जाँच (3)
22. पत्नी (2)
23. एक प्रसिद्ध लोककवि (3)
24. मत मार में है रोना-पीटना (3)
25. अकेला (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. नदी (3)
2. शत आने में है आग (3)
3. कृष्ण और गोपियों के खेल (4)
5. हाथी घोड़ा . . . . ., जय कन्हैयालाल की (3)
9. मैना है दस के आधे और नाम में (3)
10. हाथ भी और टैक्स भी (2)
11. आसान (3)
12. जान से मारना (3)
13. नकल की उलटफेर में है लम्बी हड्डी (3)
15. लकड़ी जलाने पर बचा हो जो (2)
17. 'हिया' में वात हो जाए तो सब कुछ निरर्थक हो जाए (4)
19. शरीर अगर सौ हों तो तोहफा बन जाए (3)
20. खरगोश (3)
21. दस मन के हैं बड़े-बुजुर्ग (3)

● *लक्ष्मण सिंह क्षत्री (शिक्षक), कोरजा, बिलासपुर, म.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित*

● सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक तीन-माह तक उपहार में भेजी जाएगी। हल के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से काटकर न भेजें। बल्कि उसमें जो शब्द आने वाले हों उन्हें संकेत के ही नंबर देकर लिख दें। वर्ग पहेली - 37 का हल अक्टूबर, 94 अंक में देखें।

फरवरी, 94 में हमने कुछ चित्र प्रकाशित किए थे और कविता की ये चार पक्तियाँ। इसके आधार पर पाठकों को आगे कविता लिखनी थी। जो कविताएँ हमें मिलीं उनमें से कुछ चुनी हुई यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं। इनके रचियताओं को तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

मैं हूँ बन्दर
मस्त कलन्दर
लटक पूँछ से
बनूँ सिकन्दर!

॥ एक ॥

बड़ा मछंदर नटखट बन्दर
छम-छमा-छम नाचता बन्दर

मोटी अकल देह है पतली
दीख रही है हड्डी-पसली
फिर भी है चतुर कला कलन्दर।

भरे छलाँगें मारे छकड़ी
टंग जाता है डाल पे मकड़ी
गाल फुलाए देता घुड़की
खा जाता है चट बना चुकन्दर।

❑ जगदेव प्रसाद लोधी, दसवीं, नंदनपुर, पन्ना, म.प्र.

॥ दो ॥

हूँ मैं कसरत करता
पर किसी से नहीं डरता
एक डाल जो हाथ से छूटे
दूजी पकड़ सँभलता
मैं तो रहता पेड़ के अन्दर
मैं हूँ बन्दर!
मेरी दुम में भी दम है
इसलिए मुझे नहीं ग़म है
लेकिन क्या इतना ही कम है
न मैं फेंकू खंजर
मैं तो हूँ बस मकड़ी बन्दर
खाता रोज़ कलिंदर
मैं तो हूँ बस मकड़ी बन्दर
मैं हूँ बन्दर!

❑ रवि कुमार पाण्डेय, सातवीं, खड्डा,रीवा, म.प्र.

॥ तीन ॥

हम मानव के पूर्वज बन्दर
हम हैं पूरे विश्व के अन्दर
मैं हूँ बन्दर मस्त कलन्दर

मदारी के काम मैं आता
सरकस में मैं धूम मचाता
कन्द-मूल, फल मैं खाता
बाग-बगीचा मुझको भाता

मैंने ही पार किया था
पहले सात समन्दर।

❑ राजेश कुमार शर्मा, दसवीं, बेहरचुवां, बिलासपुर, म.प्र.

|| पाँच ||

मैं हूँ हीरो इस वन का
करतब दिखलाता अजब-अजब
मुझको लगता मैं हूँ सुन्दर
कभी ऊँघता, कभी नाचता, कभी खेलता
मैं हूँ बन्दर।
अमेरिका में पाया जाता यहाँ लाया जाता
पूँछ मेरी लाजवाब कभी बैठता मनुष्य की तरह
कभी ऊँघता रहता
मैं हूँ बन्दर मस्त कलन्दर।

❑ **अनुरुचि पाण्डे, पाँचवीं,**
जाखनदेवी, अल्मोड़ा, उ.प्र.

|| चार ||

मैं इठलाऊँ
मैं बल खाऊँ
लटक डाल पर
मैं झुक जाऊँ।

मेरे देखो करतब
सुन्दर!

झूलूँ लटकूँ
डाल-डाल पर
रहूँ सदा मैं
इसी हाल पर।

कह सकते हो
मुझे धुरन्धर!

❑ **किरणदेव, गजमा,**
रायगढ़, म.प्र.

|| छह ||

हर अच्छाई है, अब मेरे अन्दर।
झूलूँ जब मैं झूला
नहीं समाऊँ तब मैं फूला।
बड़ी अजब है मेरी पूँछ,
बड़ी काम की है मेरी पूँछ।
पेड़ की डाल पर भी मैं बैठूँ
बड़े गज़ब के सपने भी मैं देखूँ।
दिखाऊँ हर तरह के करतब,
देख के सभी तब अचरज।
नाम है, मेरा मकड़ी बन्दर
है नाम भी मेरा बड़ा ही सुन्दर।

❑ **गोवर्धन सिंह चौहान,**
रामपुरा, मन्दसौर , म.प्र.

इनकी कविताएँ भी प्राप्त हुईं - *निशांत विश्वकर्मा, करेली, नरसिंहपुर। लक्ष्मीकांत शॉनक, खर्रा, दुर्ग। श्रद्धा महन्त एवं कविता, गजमा, रायगढ़। अभिषेक दुबे, होशंगाबाद। सुदामा प्रसाद विश्वकर्मा, दमोह। राजुल मालपानी, पिपरिया। प्रज्ञेन्द्र कुमार, नन्दुकोना, रायपुर। गोविन्दसिंह चौहान, रामपुरा, मन्दसौर। सन्दीप शर्मा, धार। धीरज कुमार, गतौरा, बिलासपुर। प्रदीप चतुर्वेदी, सतना।* ***सभी मध्यप्रदेश।*** *श्रीमती मंजुधर, कुलावा, बम्बई,* ***महाराष्ट्र।*** *मनु पाण्डे, अल्मोड़ा,* ***उ.प्र.।*** *संजय गौड़, साहिबगंज। शैलेष श्रीवास्तव, डुमरांव।* ***बिहार।*** *इन सभी को यह अंक भेजा जा रहा है।*

धारावाहिक विज्ञान कथाः समापन किस्त

अनोखा जीव

❑ सत्यजित राय

अब तक तुमने पढ़ा: **प्रोफ़ेसर शोंकू, हमबोल्ट के साथ उसकी प्रयोगशाला में कृत्रिम जीवन का निर्माण करने की कोशिश कर रहे थे।**

प्रयोग शुरू हुआ। दो दिन बाद उन्होंने पाया कि फ्लास्क में जीवन के लक्षण नजर आने लगे हैं। लेकिन प्रोफ़ेसर को हमबोल्ट के व्यवहार से ऐसा लगने लगा कि जैसे सारे प्रयोग का श्रेय वह अकेला ही लेना चाहता है। प्रोफ़ेसर ने अपने एक दोस्त सोमरविल को लन्दन फोन किया।

इस बीच प्रोफ़ेसर जब एक दिन पास के जंगल में घूमने गए तो किसी ने उनकी हत्या करने की कोशिश की। फिर प्रोफ़ेसर ने अपने ओम्नीस्कोप की मदद से यह पता लगा लिया कि यह कोशिश हमबोल्ट के नौकर मैक्स ने की थी। उसने ऐसा हमबोल्ट के कहने पर किया था।

उधर फ्लास्क में बढ़ रहे जीव ने वानर का रूप ले लिया था। धीरे-धीरे यह वानर भी मनुष्य में बदल गया। अब पढ़ो अन्तिम किस्त.....

मैं सोफ़े पर से उठकर फ़्लास्क तक आ गया। अन्दर का दृश्य बिल्कुल बदला हुआ था। बिलकुल नया वातावरण था। वहाँ कोई जंगल, मिट्टी, हरियाली.... कुछ नहीं था। उसकी जगह एक सपाट, चिकनी सतह थी.... और उसके ऊपर एक इंच भर ऊँचा जीव।

वानर से यह जीव विकसित हुआ था। यानी यही मनुष्य था। पर यह मनुष्य दिखता कैसा था?

हमबोल्ट के हाथों से अतिसूक्ष्मदर्शी लगभग गिर-सा पड़ा। मैंने वह उससे लेकर अपनी आँखों से लगाया और इस जीव की बनावट मुझे साफ़-साफ़ दिखने लगी।

वह एक बूढ़ा आदमी था - कोट-पैंट पहने हुए। वह लगभग गंजा था पर दाढ़ी-मूँछें तो उसकी थीं। वह गोल फ्रेम का चश्मा भी पहने था। उसका माथा चौड़ा था और उसकी आँखों में बुद्धिमत्ता और शान्त-सौम्य भाव का मिला-जुला असर था।

मैंने इस आदमी को कई बार शीशे में देखा था। वह खुद त्रिलोकेश्वर शोंकू का ही छोटा रूप था। यानी मेरा बनाया हुआ इन्सान बिल्कुल मेरे जैसा दिखता था।

फ़्लास्क देख चुकने के बाद अतिसूक्ष्मदर्शी मेज़ पर रखते-रखते मैंने ग़ौर किया कि हमबोल्ट वहाँ नहीं था। इससे पहले कि मैं कुछ सोच पाता ज़ोर के धमाकों के साथ प्रयोगशाला के दोनों दरवाज़े और खिड़कियाँ, एक-के-बाद-एक बन्द हो गए। मुझे समझ आया कि अब मैं क़ैदी बन चुका था।

मुझे कोई अन्दाज़ा ही नहीं था कि हमबोल्ट की क्या मंशा थी। प्रयोग के सफल होने के पीछे मेरे योगदान का जीवन्त सबूत देखकर वह शायद कुछ सकपका गया होगा। शायद वह मुझे ख़त्म कर डालने का कोई उपाय ढूँढ रहा होगा। अब वह तभी दरवाज़ा खोलेगा जब वह जानलेवा

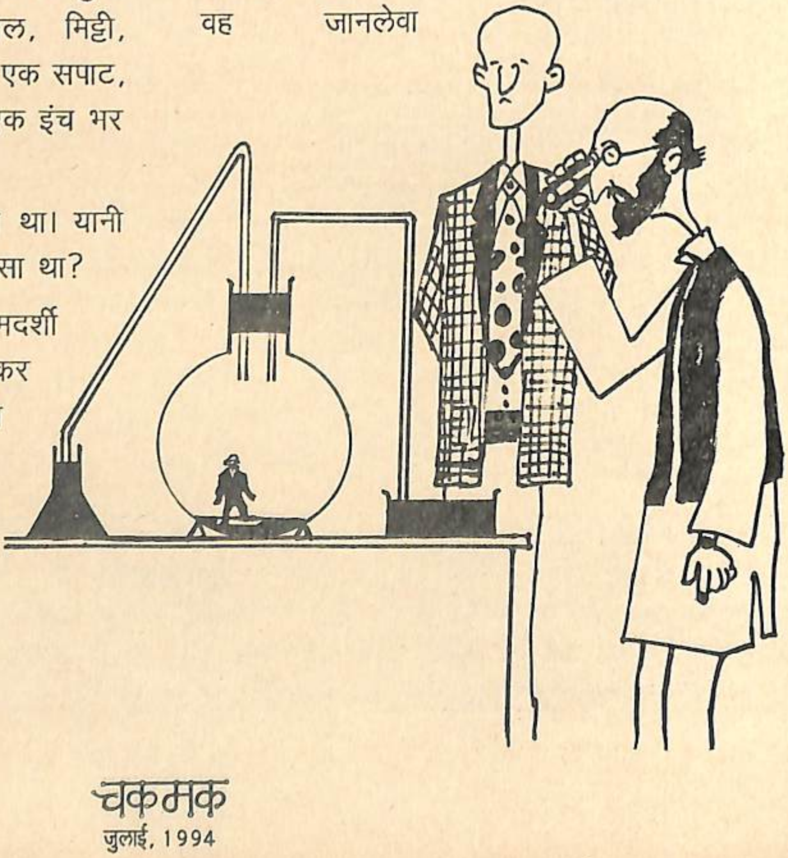

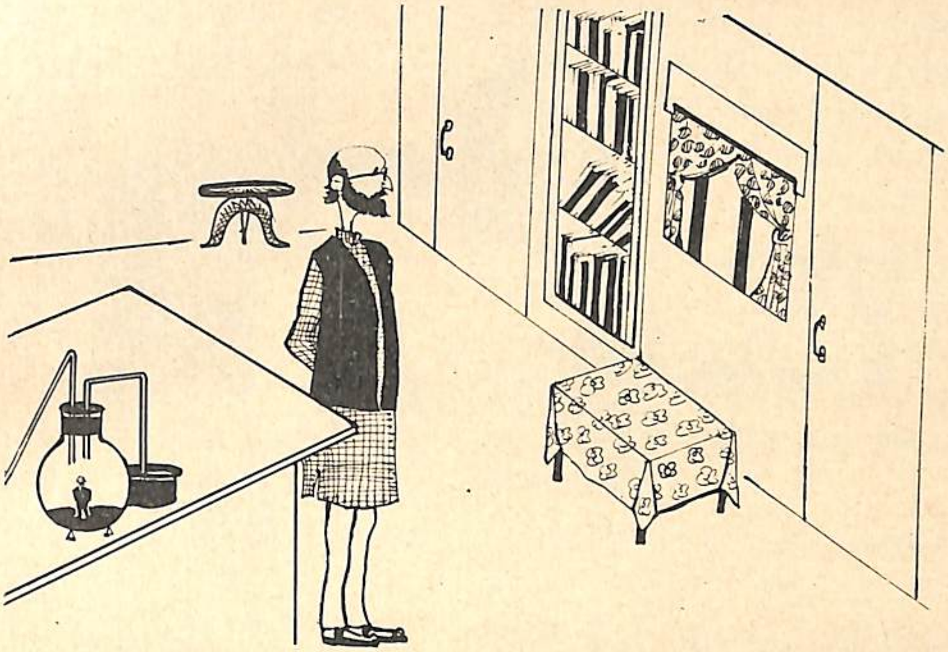

हथियार के साथ तैयार हो।

जब यह पता ही नहीं लगाया जा सकता हो कि आगे क्या होने वाला है तो उसके बारे में सोचने से क्या फायदा। बेहतर यह था कि मैं अपने क़ैदखाने को बारीक़ी से देखता, छानबीन करता। वहाँ एक तरफ तो प्रयोगशाला की मेज थी जिस पर सारे उपकरण, हमारे प्रयोग का फ्लास्क और फ़्लास्क के अन्दर 'छोटा मैं' थे। दूसरी, यानी दाईं ओर दो दरवाज़ों के बीच एक किताबों की अलमारी थी। उससे लगी दीवार में दो सीखचों वाली खिड़कियाँ थीं और उनके बीच एक मेज़ थी। उल्टी तरफ दीवार से लगा एक सोफ़ा रखा था और कोने में एक गोल मेज थी। कहीं से भाग निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

मैं अपना दमदार, तहलका मचा देने वाला पिस्तौल गिरिडीह में ही छोड़ आया था। हमबोल्ट की पिस्तौल मेरे पास ही थी पर बिना कारतूसों के वह भी बेकार थी। मैं कर ही क्या सकता था? कुर्सी पर बैठकर मेरा ध्यान फिर फ़्लास्क के उस आश्चर्यजनक जीव की ओर गया।

छोटा शोंकू एकटक मेरी ही ओर देख रहा था। थोड़ी देर बाद उसने अपने हाथ पीछे बाँधे और आगे-पीछे चहलकदमी करने लगा। जब मैं परेशान होता हूँ तो ठीक इसी तरह चहलकदमी करता हूँ। ये समानताएँ इतनी स्पष्ट थीं कि मैं हक्का-बक्का देखता रह गया, अपने ख़तरे के बारे में सब कुछ भूलकर।

मुझे पता नहीं कितनी देर तक मैं फ़्लास्क की ओर एकटक देखता रहा। पर अचानक ऐसा लगा जैसे मेरी नज़र धुँधली हो रही थी। फिर मैंने ग़ौर किया कि यह कमरे में कहीं से किसी गैस के आने की वजह से हो रहा था। मुझे एक तीखी, घबराहट पैदा करने वाली गन्ध आई।

ध्यान से ढूँढने पर मुझे वह जगह मिल गई जहाँ से गैस कमरे में आ रही थी। प्रयोगशाला में मेज़ के पीछे एक चिमनी थी। यह छत तक जाती थी और इसमें से फालतू गैसें बाहर निकलती थीं। तीखी गन्ध वाली गैस यहीं से कमरे में घुस रही थी।

मैंने रूमाल से अपनी नाक ढक ली। गैस की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ती गई। कमरे में एक हल्की-हरी धुन्ध छा गई। मेरी आँखें बुरी तरह जल रही थीं और मुझे साँस लेने में भी तकलीफ हो रही थी। फिर भी मैं वह गैस पहचान गया-------वह कार्बोदैत्य गैस थी। जो इन्सान को पाँच मिनट में खत्म कर सकती थी। मैं और कुर्सी पर बैठा नहीं रह सका, इसलिए

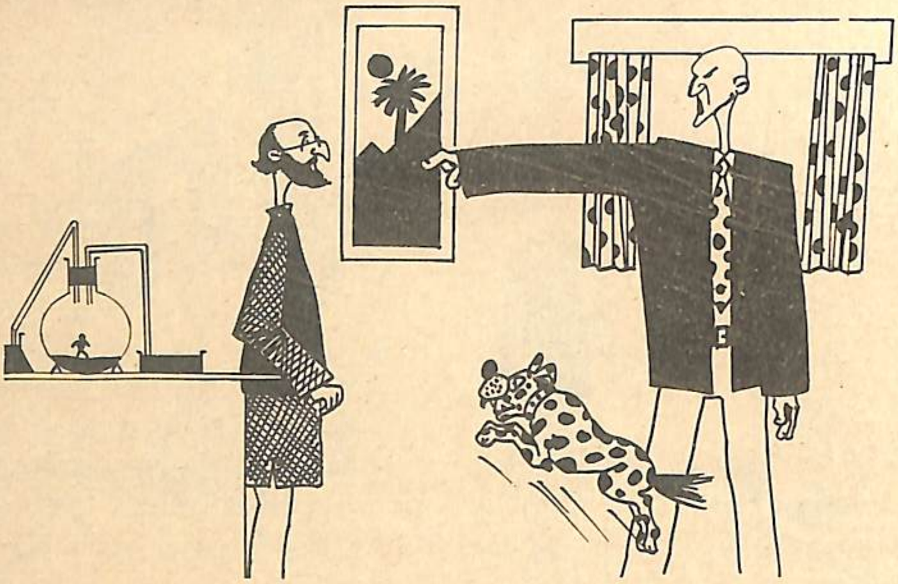

उठ खड़ा हुआ। रूमाल से कोई फ़ायदा नहीं हो रहा था। अब मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। मेरे सामने से मेज़, कुर्सी, यहाँ तक कि फ़्लास्क भी धीरे-धीरे ग़ायब होने लगा। ऐसा लग रहा था मानो कोई मेरी नज़रों के सामने गाढ़े रंग का मोटा पर्दा डाल रहा था। मैं ठीक-से खड़ा भी नहीं हो पा रहा था। मैं सामने की मेज़ पर गिर पड़ा। मेरा मन भटकने लगा - मेरी बिल्ली, मेरा नौकर प्रहलाद, गिरिडीह, मेरा बगीचा, मंदिर के पास का पेड़, अविनाश, --- फिर मेरे सामने, कोई छह इंच की दूरी पर, कुछ चमका। उस रोशनी में मुझे फ़्लास्क भी दिखाई पड़ गया। छोटा शोंकू नदारद था। उसकी जगह पर चिंगारियाँ थीं। मैंने ग़ौर किया कि मेरी दृष्टि लौट रही थी, मेरी ताकत भी, और मैं खड़ा हो पा रहा था। कमरे में से गैस बाहर निकल रही थी। मैं चकित, तब भी फ़्लास्क की ओर देख रहा था। वहाँ का माहौल बदला हुआ था। अब सीमेंटनुमा ज़मीन की जगह पारदर्शी प्लास्टिक जैसी एक सतह थी। एक नया जीव भी था।

इसके जैसा कोई जीव मैंने कभी नहीं देखा था। लगभग दो इंच की ऊँचाई जिसमें से आधा सिर ने घेर रखा था। शरीर सिर से पाँव तक एक बिल्कुल फिट इन्द्रधनुषी रंग के लबादे से ढका था। चेहरे पर कोई नाक, होंठ या कान नहीं थे। आँखें चमक रही थीं पर उनमें एक कोमलता भी थी। सिर का गंजा भाग चमकते सुनहरे रंग का था। हाथ कोहनियों तक आकर ही ख़त्म हो जाते थे। मुझे दिखाई नहीं दिया कि कोहनी के आगे ऊंगलियाँ थीं कि नहीं।

मैं ठीक से देख पाने के लिए फ्लास्क के पास जा ही रहा था कि दरवाज़ा खुल गया। हमबोल्ट था, और उसके पीछे-पीछे उसका खूँखार कुत्ता नेपोलियन।

हमबोल्ट मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया। ज़ाहिर था कि उसे मेरे जीवित रहने की उम्मीद नहीं थी।

"गैस? इतनी सारी गैस का क्या हुआ?" उसने चकित होकर पूछा।

"वह अपने आप ग़ायब हो गई।"

"नेपोलियन, इससे निपटो।"

हमबोल्ट के आदेश से उसका विशाल कुत्ता दाँत निकालकर ज़ोर से गुर्राया और मेरी ओर कूदा।

पर वह मुझ तक पहुँच नहीं पाया। शून्य से ही एक तीखी किरण निकली जो उसके शरीर से टकराई और वह वहीं ढेर हो गया। यह किरण फ़्लास्क में से निकली थी।

हमबोल्ट चिल्लाया, "नेपोलियन।" वह कमरे में

आया, एक बार कुत्ते की ओर देखा और फिर मेज़ से उसने खतरनाक एसिड की शीशी उठा ली। वह उस शीशी को मेरी ओर फेंकने ही वाला था कि एक किरण उससे भी टकरा गई। बिल्कुल वैसे ही जैसे कुत्ते से टकराई थी। उस अजीब-से, नए जीव ने एक अनोखी किरण की मदद से मशहूर जर्मन वैज्ञानिक को काबू में कर लिया।

हमबोल्ट मुँह के बल अपने कुत्ते पर गिर पड़ा था। मैंने उनकी जाँच की। दोनों जीवित थे पर पूरी तरह बेहोश।

इसके लगभग एक घण्टे के अन्दर ही सोमरविल पहुँच गया था। सब कुछ सुनने के बाद उसने कहा, "हमबोल्ट ने लगभग दस साल मानसिक अस्पताल में बिताए थे। वह ठीक तो हो गया था पर तब से वैज्ञानिक समाज में उसकी प्रतिष्ठा गिर गई थी। पिछले कुछ सालों से वह बिन बुलाए ही वैज्ञानिक सम्मेलनों में पहुँच जाता है। कोई उसे टोकता नहीं था इस डर से कि कहीं वह फिर बीमार न हो जाए। मुझे आश्चर्य है कि तुमने यह सब कभी सुना नहीं। उस दिन मैंने फोन पर ही तुम्हें आगाह करने की कोशिश की थी पर लाइन कट गई थी। इसलिए मैंने खुद यहाँ पहुँचने का फैसला किया।"

यह सब बातें हम पहली मंज़िल के मेरे कमरे में बैठकर कॉफी पीते हुए कर रहे हैं। हमबोल्ट और उसके कुत्ते दोनों को अलग-अलग अस्पतालों में भेज दिया गया है। उन दोनों को ज़बरदस्त झटके लगे हैं और कोई नहीं जानता ठीक होने में उन्हें कितने दिन लगेंगे।

सोमरविल ने आते ही उस अजीबोग़रीब जीव को देखा था। हम दोनों को समझ आया कि वह विकासक्रम में इन्सान के बाद की अवस्था थी। हालाँकि यह पता लगाने का कोई तरीका नहीं था कि कितने हज़ारों-लाखों साल बाद इन्सान इस अवस्था तक पहुँचेगा।

कॉफी ख़त्म करके हमने तय किया कि नीचे जाकर उस सुपर इन्सान को देखना चाहिए। प्रयोगशाला में घुसते ही हमने एक विस्मयकारी नज़ारा देखा जिसकी कि हमें कल्पना तक नहीं थी!

फ़्लास्क एक लाल-सी रोशनी से भरा हुआ था, ऐसा उदास लाल प्रकाश जैसा हम कभी-कभी सूरज के डूबने के बाद देखा करते हैं। पारदर्शी सतह की जगह अब रेत थी। ऊपर पिचके हुए अंगूर जैसी एक चीज़ बेजान पड़ी थी। करीब़ जाकर देखने पर हमें हल्का-सा कम्पन दिखा उसमें।

क्या यह जीवन था? मानव-विकास के क्रम की आने वाली अवस्थाओं में से एक? क्या मनुष्य की भावी संतानें इस तरह से रेत पर माँस का एक

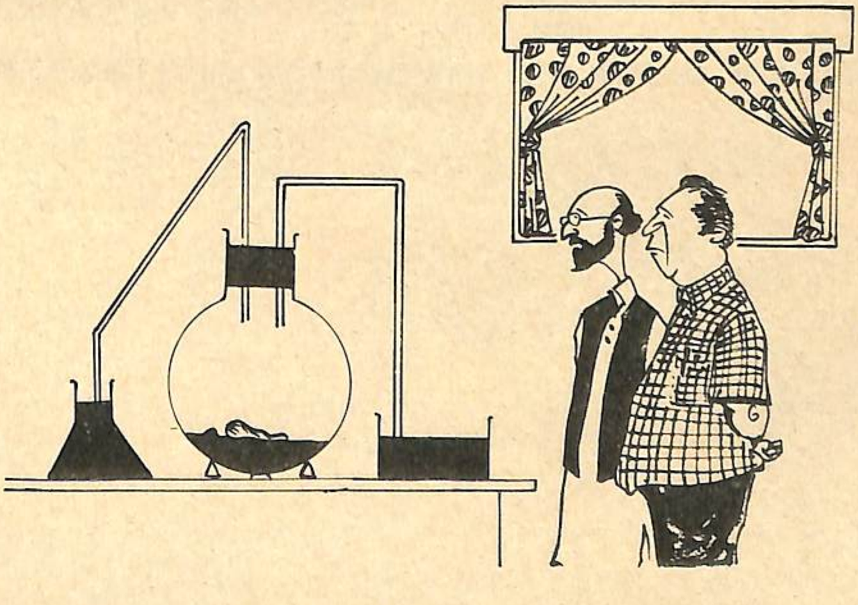

लोथड़ा बनकर पड़ी रहेंगी? बगैर हाथ-पाँवों के? सोच-विचार की किसी भी शक्ति से वंचित। केवल दो थकी-माँदी आँखें समय की अन्तिम सीमा तक यूँ ही ताकती हुईं? क्या यही हश्र होगा मानव का?

सोमरविल ने कहा, ''मैं यह नजारा नहीं देख सकता शोंकू। कुछ करो।''

लेकिन करने को तो कुछ भी नहीं था। जिस वक्त हम खड़े-खड़े यह नज़ारा देख रहे थे, उसी समय वातावरण में हल्की-सी बाँसुरी जैसी स्वर-लहरी गूँज रही थी। और उसी स्वर-लहरी के साथ-साथ, वह रोशनी, वह रेत और माँस का वह लोंदा; सब गायब हो गए। इस तरह विकास के अंतिम क्रम की अन्तिम पायदान समाप्त हुई। रह गया तो सिर्फ एक काँच का फ्लास्क जिसके सामने खड़े थे दो आश्चर्यचकित वैज्ञानिक मुँह फाड़े!

(समाप्त)

❑ अंग्रेज़ी से अनुवादः दुलदुल विश्वास

सभी चित्र : देबाशीष पाल

माथापच्ची - हलः जून 94 अंक के

1. तिजोरी में तीन ताले लगाए जाएँगे और हरेक मालिक दो-दो चाबियाँ रखेंगे। मान लो पहले मालिक के पास अ और ब चाबियाँ हैं, दूसरे के पास ब और स और तीसरे के पास अ और स। तो किन्हीं दो मालिकों की चाबियाँ मिलाकर अ, ब, स तीनों ताले खोले जा सकतें हैं।
2. गिलहरी नं. 5 ही कट्टो है।
3. 10.
4. शाहीन को पहली चाल चलते हुए, जीतने के लिए यह कोशिश करनी होगी कि खेल सम संख्या की चालों पर खत्म हो यानी 2,4,6,....चालें। इससे आख़िरी चाल इला की होगी और वो हारेगी। यहाँ चूँकि कुल गोटियाँ 6 हैं और कुल ढेर तीन। इसलिए कम-से-कम तीन चालें चलनी होंगी और अधिक-से अधिक 6 चालें चली जा सकती हैं। सो अब सम संख्या की चालों के दो ही विकल्प बचते हैं - 4 या 6 चालें। शाहीन को अपनी चालें ऐसे चलनी होंगी कि खेल या तो 4 चालों में ख़त्म हो जाए या 6 चालों में।
5. माधव बाबू के चारों बेटों की उम्र है 3,4,5, और 6 वर्ष।

वर्ग पहेली-34 : हल

1 आ		2 आ	म	3 द		4 व	5 र	क
6 द	या	र		7 ल	क्ष		क	
त		सी		ह		8 अं	बा	9 र
	10 भा		11 क	न	12 की			स
13 चि	ल	बि	ल		14 म	स	15 न	द
रा			16 वा	17 दि	त		फा	
18 यु	19 ग	ल		सा		20 छ		21 ना
	ढ़े		22 ठाँ	व		23 प	पै	या
24 क	ला	म		25 री	त	ना		ब

वर्ग पहेली - 34 का एक भी सही हल प्राप्त नहीं हुआ है। कम-से-कम यानी दो गलतियों वाला हल अविनाश दुबे, बरही, कटनी, म.प्र. ने भेजा है। इन्हें तीन माह तक चकमक उपहार में भेजी जाएगी।

फार्म 4 (नियम 8 देखिए)

मासिक चकमक बाल विज्ञान पत्रिका के स्वामित्व और अन्य तथ्यों के सम्बंध में विवरण

प्रकाशन का स्थान : भोपाल
प्रकाशन की अवधि : मासिक
प्रकाशक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी भोपाल- 462 016
मुद्रक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी भोपाल-462 016

सम्पादक का नाम : विनोद रायना
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016

उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है : रेक्स डी रोज़ारियो एकलव्य ई-1/208, अरेरा कालोनी भोपाल-462 016

मैं विनोद रायना, यह घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

1 जुलाई 1994

विनोद रायना
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

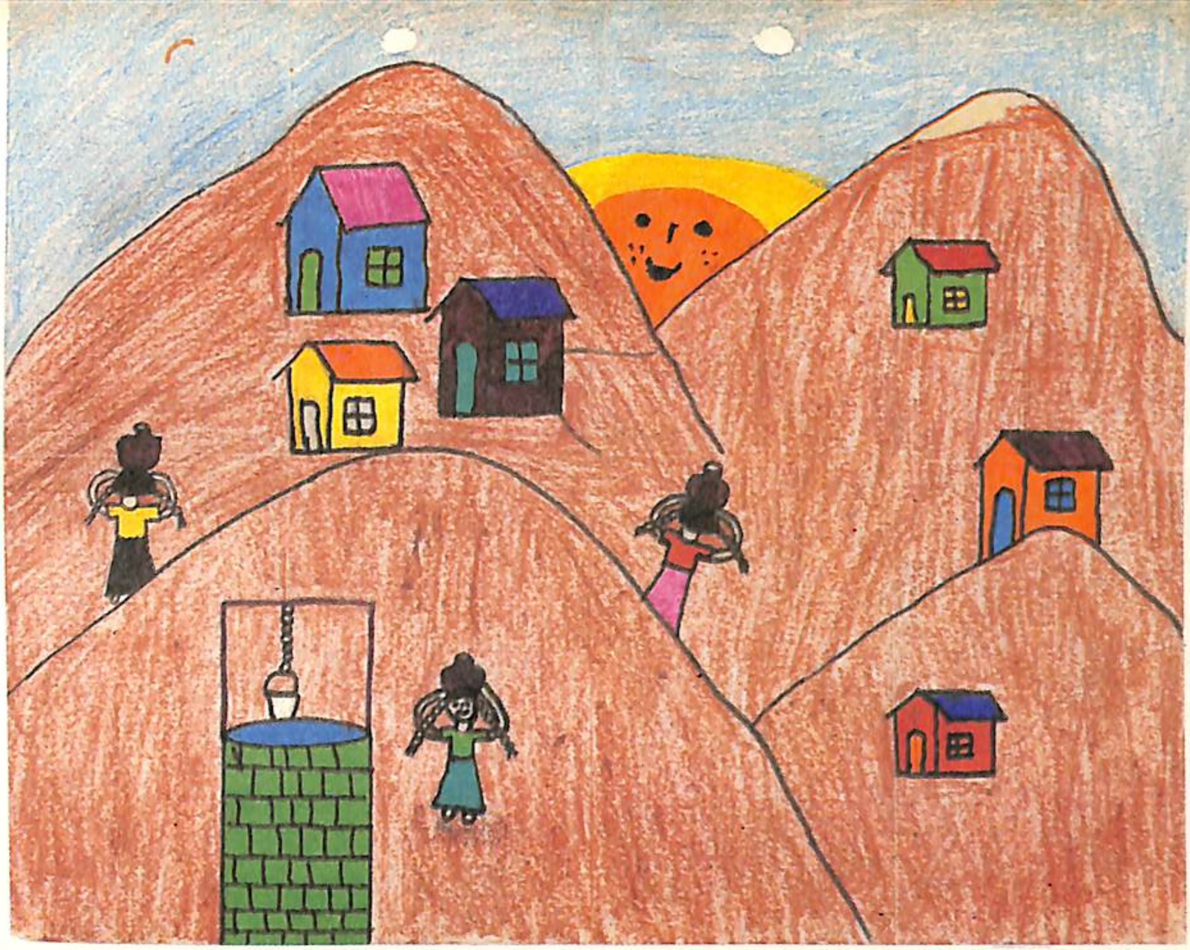

वनश्री साहा, पाँचवीं, दिल्ली

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/94

पलाश गांगुली, नौ वर्ष, भोपाल म.प्र.

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कालोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना